प्रयोजन होगा, उतने दिनों तक कृषकों और निम्न श्रेणी के लोगों को निश्चय इस तरह क्लेशित होना होगा। किन्तु देवी सिंह केवल कृषकों को प्रहार करके ही शान्त न हुआ। उस के कारागार में ज़मीदार, तालुकेदार और प्रजा के परिवार की स्त्रियां तक लाई गईं। इस कारागार में शिशु सन्तान को गोद लेकर जननी क्रन्दन करती हैं; देवी सिंह के सिपाही उन की पीठ पर बेत मारते हैं। इन्ही रमणियों के साथ जो तरह २ के कुत्सित अत्याचार किय गये थे, उन्हे सविस्तार लिखने से, पुस्तक निश्चय अश्लीलता पूर्ण हो जायगी। पाठक और पाठिकागण लेखक को एक अतिशय नीच प्रकृतिका मनुष्य समझेंगे किन्तु ऐतिहासिक उपन्यास में इन सब विषयों का एक बार उल्लेख न करना उचित नहीं बोध होता।

सैकड़ों कुलकामिनियां देवी सिंह के कारागार में बैठ कर क्रन्दन करती हैं। इन लोगों के चीत्कार और आर्त्तनाद से कारागार निनादित होता है। कारागार के प्रहरी गण किसी रमणी को विवस्त्रा करके प्रहार करते हैं; किसी को स्वामी के संमुख

विवस्त्रा कर उसका धर्म नष्ट करने के अभिप्राय से सिपाहियों के अधीन करते हैं; * किसी की गोद के लड़के को मारते ही जननी शिशु रक्षा करने के अभिप्राय से प्राण सौंप कर अपने गोद में उसे लुकाने की चेष्टा करती हैं; और जननी के हाथ पर असंख्य बेंत घात होते हैं।

*   *   *   *

प्रिय पाठक! भीषण अत्याचार की कथा लिखने में लेखनी अब अग्रसर नहीं होती; हाथ कांप उठता है। किंतु एक प्रश्न है—नाना धुधू पंथ से भी क्या देवी सिंह अधिक नराधम नहीं था? नाना धुन्धु पंथ का नाम सुनते ही लोगों के मन में घृणा का उदय होता है। किंतु देवी सिंह का यह अत्याचार जब प्रकाश हुआ, तब वारेन हेस्टिंग्स, गंगागोबिंद सिंह और हेस्टिंग्स के पक्ष वाले अंगरेज़ों ने देवी सिंह की रक्षा करने के लिये प्राण पण से चेष्टा की थी। यही तो प्राचीन ईस्ट इण्डिया कम्पनी का सद्विचार और यही उस समय के सुसभ्य अंगरेज़ों का सदाचरण है।

* Vide note (14) in the appendix.

रंगपुर और दिनाजपुर के सम्पूर्ण लोगों के परिवार की स्त्रियां अब तक देवी सिंह के कारागार में नहीं लाई गई थीं; वह लोग इस भीषण अत्याचार की बातें सुन कर प्रथम ही अपनी २ विषय सम्पत्ति, पश्चात् संतान संतति पर्य्यंत बेंच कर, जमा अदा करने लगे। किंतु देशके सब लोग अपने २ घर, बारी, गाय बैल बेचने को लालायित हैं। क्रय कारी कहीं नहीं सुतरां जिन सब गौओं का मूल्य बीस पचीस रुपये से कम नहीं था, वह एक या डेढ़ रुपये को बिकने लगी। बाज़ार में दस मन धान्य एक रुपये को बिकता था।

* * * *

नवम अध्याय ।

प्राण नगर का जंगल ।

पूर्व्व ही लिखा गया है, कि रामानंद गोस्वामी के पकड़े जाने के पूर्व्व ही उनकी पुत्र वधू सत्यवती देवी ने वृद्धा दासी और दोनों विश्वासी प्रजा को संग ले कर, प्राण नगर के घने जंगल में प्रवेश किया। प्राण नगर का जंगल हिंसक जंतुओं से परिपूर्ण है। इन्ही हिंसक जंतुओं के भय से कोई दिन को भी इस जंगल में प्रवेश करने का साहस नहीं करता। किंतु ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल में, इस देश के मनुष्य इन सम्पूर्ण हिंसक जंतुओं से भी कम्पनी के सिपाही और साहेबों का अधिक भय करते हैं। सुतरां कम्पनी के मनुष्यों के आक्रमण से धर्म्म रक्षा करने के निमित्त बंग महिला परमा साध्वी सत्यवती देवी ने प्राण नगर के हिंसक जंतुओं के निवास स्थान में आश्रय ग्रहण किया।

माघमास, दिनाजपुर के उत्तर प्रांत के उस दारुण शीत निवारण के लिये सत्यवती के निकट

परिधेय वस्त्र के भिन्न और द्वितीय वस्त्र नहीं था। रामानंद गोस्वामी की स्त्री सुनीति देवी थी। सुनीति देवी के मृत्यु के पश्चात उसकी पुत्र बधू सत्यवती, प्रत्येक वर्ष शीतकाल में देश के समुदाय कङ्गाल ग़रीबों को शीत वस्त्र प्रदान कर उन लोगों का कष्ट निवारण करती थीं। ग़रीबों को शीत वस्त्र देने के लिये प्रत्येक वर्ष सहस्त्रों रुपया व्यय करती थीं। किंतु आज अपने ही शीत निवारण के लिये उनके पास एक वस्त्र भी नहीं है। रामानन्द के शिष्यगण में से प्रायः सबही प्रत्येक वर्ष शीत काल में उनके निकट एक एक जोड़ा काश्मीरी शाल का पठा देते थे। इतने असंख्य असंख्य शाल रुमाल जिनके घर में थे; आज उन्ही की पुत्र बधू एक बस्त्रा कंगालिनी के बेश में हिंसक जंतु से संकुल प्राण नगर के जगल में प्रवेश करती हैं। बंग समाज के लोगों में से कोई ऐसा नहीं है कि जो उनको आश्रय देकर इस रमणी की धर्म्म रक्षा करे। धिक् बंग समाज! धिक् बंग देश! इस देश का एक बार ही विध्वंस होना भला था।

एक वस्त्रा सत्यवती देवी जंगल में बैठ कर रात्रि व्यतीत करती हैं। रात की तुषार-विन्दु से पहना हुआ वस्त्र भींग गया है। सर्वाङ्ग होकर तुषार बिंदु पतित होता है। किंतु हृदय स्थित प्रेम भक्ति और स्नेह की कैसी अपूर्व्व महिमा है। भींजा वस्त्र पहनी हुई देवी सत्यवती अपने सकल कष्ट, सकल दुःख भूल कर, केवल श्वशुर के विपद की चिंता करती हैं। उनको स्वयं कोई शारीरिक कष्ट अनुभव नहीं होता है। वृद्ध श्वशुर के कष्ट यन्त्रणा का विषय सोचते सोचते निज शारीरिक कष्ट बिलकुल ही भूल गई हैं, प्रभात होते ही श्वशुर के उद्धार का कोई उपाय अवलम्बन करने को मन ही मन चिंता करती हैं।

किन्तु दुःख की निशा शीघ्र ही अवसान नहीं होती है। सत्यवती सोचती हैं कि रात्री व्यतीत होने पर श्वशुर के उद्धार का कोई उपाय अवलम्बन करूंगी सुतरां दो प्रहर रात्रि के पूर्व्वही उन्हों ने सोचा है कि और अर्द्ध घन्टा पर रात शेष होगी। किन्तु कितने ही अर्द्ध घंटा व्यतीत हो गये, इस दुःख की निशा का अंत नहीं हुआ। तब वह और

धैर्य्य धारण नहीं कर सकी किस उपाय से श्वशुर का उद्धार करेंगी उसी विषय में कृपा और जगा से कथा वार्त्ता करने लगी।

पाठकों के जानने के लिये हम इस स्थान में जगा और कृपा का परिचय देते हैं। इन लोगों के पिता माधवदास रामानंद गोस्वामी के घर से लगी हुई सीर ज़मीन की प्रजा थे। अति बाल्यकाल में इन लोगों के पिता माता का वियोग होने पर, परम दयावती रामानंद की सहधर्म्मिणी सुनीति देवी ने अन्न वस्त्र देकर इन लोगों का प्रतिपालन किया था। ये लोग उस समय ज़मीन नहीं जोत सके थे। किन्तु सुनीति देवी ने इन लोगों के पिता की ज़मीन अन्यपुरुष से जुताकर, जोत के ख़रचे वग़ैरह के सिवाय, जो कुछ लाभ होता, उसे इन दोनों बालकों के लिये अमानत रखती थीं, ये जब कुछ बड़े हुए, तब सुनीति ने इन के घर की तइयारी और जोत के लिये बैल ख़रीदने के निमित्त, वही अमानत का रुपया दिया था। ये लोग रामानंद गोस्वामी पर पिता की भांति भक्ति श्रद्धा करते थे और उन के मङ्गलार्थ प्राण विसर्जन करने में भी कुंठित नहीं होते थे।

वस्तुतः ईस्ट इण्डिया के कम्पनी की दीवानी प्राप्ति के पूर्व इस देश के ज़मीदारगण अपनी अपनी प्रजा का सन्तान की भांति स्नेह से प्रतिपालन करते थे। प्रजा गण भी अपने अपने भूम्याधिकारियों पर पिता की भांति भक्ति श्रद्धा करते थे। किन्तु ईस्ट इण्डिया कम्पनो के दीवानी प्राप्ति के पश्चात क्रमशः ज़मींदारों की देनगी राजस्व नाना प्रकार से बढ़ने लगी। हज़ारों आदमियों की निष्कर ब्रह्मोत्र ज़मीन के ऊपर जमा लगाई गई। उसी से भूमि के अधिकारी गण ने अनन्योपाय हो कर प्रजा पर भी जमा वृद्धि करना आरम्भ किया; और उसी से प्रजा और भूमि के अधिकारियों में शत्रुता का प्रारम्भ हुआ। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन के प्रारम्भ से जितना ही भूमि का कर वृद्धि होने लगा, उतना ही प्रजा और भूम्यधिकारियों में दिन दिन विद्वेषानल प्रज्वलित होता था।

मुसल्मानों के राज्य में किसी ज़मींदार को कभी अपनी प्रजा के विरुद्ध मुक़द्दमा उपस्थित नहीं करना पड़ता था। किसी प्रजा ने भी अपने ज़मींदारों के विरुद्ध कभी नालिश न किया है, यह कभी नहीं सुनाई

पड़ा था। ज़मींदार गण अपनी प्रजा को कभी उन के निवास गृह से निकाल बाहर नहीं करते थे। अत्यन्त स्वेच्छाचारी राजा टीपू सुल्तान के राजत्व काल में महीसूर प्रदेश में ज़मींदार गण प्रजा को उन के निवास गृह से निकाल देना नितान्त धर्म्म विरुद्ध कार्य्य समझते थे राजपुताना प्रदेश की प्रत्येक प्रजा अपने अपने निवास गृह को "बपौती" अर्थात् पैतृक सम्पत्ति कहा करती थी।

*   *   *   *   *

सन् १७७१ ई० में जिस समय रामानन्द के पुत्र प्रेमानन्द देबी सिंह की पुरनिया वाली कचहरी में पकड़ लाये गये तब रूपा और जगा अपने मालदह वाले घर में थे। लोगों से रामानन्द गोस्वामी के विपद की वार्त्ता श्रवण कर. ये दोनों भाई अपने अपने स्त्री पुत्र प्रभृति को श्वशुरालय में भेज कर पुरनिया चले गये। किन्तु वहां रामानन्द से इन की भेंट नहीं हुई रामानन्द इन के पुरनिया पहुंचने के छ: मास पहले वहां से अपने कई विश्वासी प्रजाओं को सङ्ग लेकर रङ्गपुर को भाग गये थे। उन सम्पूर्ण प्रजाका गृह पुरनियामें था। रूपा और जगा

ने पुरनिया पहुंच कर उन्हीं सब प्रजा के परिवारों से सुना कि रामानन्द भाग कर रङ्गपुर गये हैं। तब एक मुहूर्त्त भी बिलम्ब न करके इन्हीं ने रामानन्दके अनुसन्धान के लिये रङ्गपुरकी ओर यात्रा की। रङ्गपुर में अनेक अनुसन्धान पर रामानन्द से भेंट हुई इसी समय से बराबर ही ये लोग रामानन्द के साथ हैं बिगत दस वर्षों में जगा केवल चार पांच बार गृह जाकर अपने परिवार से भेंट कर आया है, और रूपा गृह को दो बार से अधिक नहीं गया। ये दोनों भाई एकत्र कभी गृह को नहीं जाते। रूपा जब गृह को जाता, तब जगा रामानन्द के साथ रहता और जगा के जाने पर रूपा रहता। इस भांति रूपा और जगा रामानन्द के बिपद भागी होकर उन के सङ्ग जङ्गल जङ्गल भ्रमण करते थे आज ये दोनों भाई इस सघन जङ्गल में रामानन्द की पुत्र वधू के निकट बैठ कर केवल अश्रु बिसर्ज्जन करते हैं। एक एक बार जङ्गल में व्याघ्र का गर्ज्जन श्रवण कर सत्यव्रती चौंक उठती हैं तब ये लोग लाठी लेकर खड़े हो उसे निर्भय करते हैं।

किञ्चित् कालोपरान्त सत्यवती ने कहा—"कृपा ससुर जी के उद्धार करने का अब क्या उपाय करोगे इस वृद्ध वयस में उन को प्रहार करने से निश्चय ही उनकी मृत्यु होगी। उन्हीं ने इतना दान धर्म्म किया है परमेश्वर ने उन के भाग्य में क्या अकाल मृत्यु लिखा था?"

कृपा ने कहा "बहू! मैं उन से बार बार कहता था कि आप भी हमारे सङ्ग एक ही जङ्गल में रहें लेकिन उन्हीं ने न माना और कहा था कि मेरे बेटे की जो गति हुई है, मेरी भी वैसो ही होगी, बेटे के मरने से बाबा को सुध बुध एक साथ ही चली गई है।"

सत्यवती—किन्तु अब उनके उद्धार करने के लिये क्या उपाय किया जा सकता है?

जगा—"उद्धार तो अब कर सकते हैं। कितने बरकन्दाज आये हैं? होंगे तो चार पांच ही होंगे। हम दोनों भाई दो लाठी लेकर गये तो उन पांचो जनों को निकास के बाबा को छीन सकेंगे लेकिन वह ऐसा न करने देंगे।"

सत्यवती— उन्हीं ने सोचा है, कि उनके स्वयं धरा जाने पर और कोई मुझे पकड़ने नहीं

आयेगा यही सोच कर, मेरी रचा के निमित्त ऐसा किया है।

रूपा—बहू! चाहे जैसा करें देवी सिंह के हाथ से छुटकारा पाना कठिन है। उन्हीं ने आपको साथ लेकर काशी जानेको कहा है। अब आप जो कहें वह करें। जब तक हमारे प्राण हैं तब तक आप को कोई छू नहीं सकता।

सत्यवती—उनको इस भांति डाकुओं के हाथ में छोड़ कर, मुझे काशी जाने की इच्छा नहीं होती। उन्हें उद्धार करने के निमित्त प्राणपण से चेष्टा करनी होगी। उससे यदि कोई कभी मेरे धर्म नष्ट करने की चेष्टा करे, तो उसी चण आत्महत्या करके धर्म्म रचा करूंगी।

रूपा—उनके उद्धार करने के निमित्त आप क्या करने को कहती हैं?

सत्यवती—उनको देवी सिंह के प्यादा गण धर कर निश्चय ही दिनाजपुर ले जायेंगे। हम लोग उनके पीछे पीछे दिनाजपुर जायेंगे। इतने दूर रहेंगे कि वह लोग हमको न चीन्ह सकें। यदि रास्ते में प्यादा उनको मारें तो तुरत उन्हें दुष्टोंके हाथसे छुड़ा लेंगे।

उनको मारेंगे यह सोच कर मेरी छाती फटती है। यदि बरकन्दाज़ गण उनको कुछ कष्ट न देकर बराबर दिनाजपुर ले जायें, तो संग ही संग दिनाजपुर जाउंगी। वहां उनके अनेक शिष्य हैं। वह लोग ऐसी बिपद के समय उनके उद्धार के लिये अवश्य ही चेष्टा करेंगे।

जगा—बहू! आपके दिनाजपुर में जितने शिष्य थे, पर प्रायः सब अब जेल में पच मर रहे हैं। और कोई २ देश छोड़ कर चले गये हैं। शिष्य सेवकों का भरोसा न करो। बाबा को छिनवा कर लाये बिना दूसरा उपाय नहीं है। अब आप जो कहें वही करेंगे।

सत्यवती—तुम दो ही मनुष्य हो देबीसिंहके लोग यदि तुम दोनों को पकड़ ले जायें, तब तो बड़ी बिपद होगी इस लिये झगड़ा बिबाद न करके जिससे उनका उद्धार हो सके, वही करना उचित है।

रूपा—तो हम उनके पीछे २ दिनाजपुर जाकर क्या करेंगे, उनको दिनाजपुर ले जाकर जेल में वह बांध रक्खेंगे। जेल में रख कर मारने पर हम लोग क्या कर सकेंगे?

सत्यवती--जेल में जाने का कोई उपाय नहीं है?

कृपा जेल में क्यों जाने देंगे। वहां सैंकड़ों स्त्री पुरुषों को मार पीट करते हैं।

सत्यवती—तो अब उनके उद्धार के लिये क्या उपाय अवलम्बन करोगे।

जगा—हम छोटपन ही से उन की दाल रोटी खाकर स्याने हुए हैं। हम प्राण देकर उनका उद्धार कर सकें तो अभी तैयार हैं किन्तु इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं दीखता। अब आप जो कहें वही करेंगे।

इन लोगों की परस्पर कथा वार्त्ता में रात्रि व्यतीत हुई। प्रातः काल जंगल से बाहर होकर दिनाजपुर की ओर चले।

———

दशम अध्याय

हर राम

११८८ साल के माघ मास में (सन १७८२ ई० के जनवरी में) देबी सिंह के बरकन्दाज गण से रामानन्द गोस्वामी पकड़े गए थे। बरकन्दाज गण ने उनको देबी सिंह की तहसील कचहरी से मिले हुए कारागार में ला रक्खा। कारागार का नाम सुन कर पाठक गण सोचेंगे, कि वर्त्तमान समय की गवर्नमेन्ट के जेल के समान कदाचित देबी सिंह का कारागार था। किन्तु वर्त्तमान समय में गवर्नमेन्ट के जेल जिस प्रणाली से गठित होते हैं, उस प्रणाली से निर्मित कोई भी कारागार पूर्व्व में इस देश में कभी नहीं था। वर्त्तमान समय में प्रत्येक पुलिस स्टेशन में अभियुक्त असामियों को बांध कर रखने के निमित्त जैसे एक या दो स्वतन्त्र गृह होते हैं, पूर्व्व में बड़े बड़े ज़मींदारों की तहसील कचहरी में वैसेही दो एक मासिल घर थे। ज़मींदार गण कभी कभी किसी दुश्चरित्र प्रजा को चोरी इत्यादि के अपराध में

पकड़ कर दो एक दिनके निमित्त उसी गृह में बांधकर रखते थे। इसी भांति चारों ओर की दीवार से हीन घर को ही मनुष्य कारागार कहा करते थे। वर्त्तमान समय में अपराधियों को प्रायः आजीवन कारागार में रहना होता है; सुतरां दीर्घ काल के निवास योग्य सम्पूर्ण कारागृह बनाये जाते हैं। किन्तु पूर्व्व में इस देश में ऐसे कारागारों का अधिक प्रयोजन नहीं पड़ता था।

देवी सिंह के दिनाजपुर की तहसील कचहरी से लगे हुए कारागार के चतुर्दिक् कोई दिवार नहीं थी। दिवार शून्य एक घर में ज़मींदार और कृषकों को धर लाकर बांध कर रखते थे। किन्तु ११८८ साल के प्रारम्भ में इतने अधिक मनुष्यों को धर लाये थे कि इस गृह में और मनुष्य नहीं रह सकते थे। समय समय पर अनेकानेक लोगों को गृह के आंगन में रख कर प्रहार करना पड़ता था। रामानन्द गृह में प्रवेश करते ही अचैतन्य अवस्था में पड़ रहे हैं, सुतरां कारागार में प्रवेश पर उनको और अधिक प्रहार नहीं किया जाता है। उनके कारागार में प्रवेश के चार पांच दिन पर जैसे वह कारागार से

छूटे वह आगामी अध्याय में लिखा जायेगा। देवी सिंह के लोगों ने ११८८ साल के प्रारम्भ से ११८९ सालके अगहन मास पर्य्यन्त रङ्गपुर के ज़मींदार प्रजा और कृषकों पर जैसा अत्याचार किया गया था, उसे ही केवल इस स्थान पर संक्षेप में प्रकाश करते हैं।

देवी सिंह को प्रायः सर्वदा ही दिनाजपुर में रहना पड़ता है उन के हस्त में विविध कार्य्यों का भार है वह कलेक्टर के दीवान हैं। और दिनाजपुर के अबोध राजा के स्टेट के रक्षणावेक्षण का भार भी उन्हीं के हाथ में दिया गया है। सुतरां वर्ष में दो एकबार के भिन्न उन की रङ्गपुर जाने का अत्यन्त सुविधा नहीं होता। किन्तु रङ्गपुर की बहुत सी ज़मीन भी उन्हीं ने बेनामा करा कर इज़ारा लिया था। रङ्गपुर के इजारा की जमा वसूल करने के लिये उन्हीं ने ११८८ साल के बैसाख मास में (सन् १७८१ ई० के एप्रिल में) कृष्ण प्रसाद को नियुक्त कियाँ। * कृष्ण दास के रङ्गपुर के संपूर्ण ज़मींदारों से ज़्यादा जमा में कबूलियत तलब करने पर, कई एक प्रधान २ ज़मींदारों ने देवी सिंह की देश की दुर्दशा जनाने

* Vide note (16.) in the appendix.

के लिये दिनाजपुर आकर उन से भेंट किया। इस समय ज़मींदारों की ओर ज़्यादा जमा देना साध्य नहीं था पूर्व्व ही में उन पर जमा इतनी बढ़ गई थी, कि इस वर्ष गवर्नर जेनरल ने विज्ञापन द्वारा अंगरेज़ों की ओर जमा बढ़ाने में निषेध किया था। किन्तु देबी सिंह ने सोचा, कि गवर्नर जेनरल का विज्ञापन केवल मनुष्यों के आंख में धूल डालने के सिवाय ओर कुछ भी नहीं है। सुतरां अभ्यागत ज़मींदार गण ने जब कहा, कि ओर ज़्यादा जमा देने में वे सम्पूर्ण असमर्थ हो गये हैं तब वह अत्यन्त कोपाविष्ट हुए; ओर तत्क्षणात् उन को क़ैद करके उन लोगों पर पहरा बैठाया। ओर उस के दूसरे दिन हर राम को संग देकर बन्दी स्वरूप इन्ही सम्पूर्ण ज़मींदारों को रङ्गपुर भेज दिया। हर राम ने रङ्गपुर आ कर इन लोगों से ओर अन्यान्य समुदाय ज़मींदारों से ज़्यादा जमा में कबूलियत तलब किया। ओर कृष्ण प्रसाद ने पूर्व्वोक्त ज़मींदारों को दिनाजपुर जाने दिया था, इसी से बरख़ास्त हुआ।

हर राम ने, कृष्ण प्रसाद के परिवर्त्तन में रङ्गपुर के इजारा की जमा तहसील के कार्य्य में नियुक्त

होकर, समुदाय ज़मींदारों को बन्दी कर बेत से पीटने को आज्ञा दिया। वेत्राघात पर भी सम्पूर्ण ज़मीदारों ने ज़्यादा जमा की कबूलियत देना स्वीकार नहीं किया, उन लोगों को गोपृष्ठ पर आरोहण करा कर ढिंढोरी देकर ग्राम के आस पास घुमा कर लाने का हुक्म दिया।

देश में प्रचलित लोकाचार के अनुसार इस प्रकार के दण्ड पाये लोग एक बार ही जाति भ्रष्ट हो जाते थे। सुतरां दो चार जमींदारों को गोपृष्ठ पर आरोहण कराते ही बाक़ी सब ज़मींदारों ने, अपने अपने जाति और मान की रक्षा के लिये उसी समय ज़्यादा जमा में कबूलियत दे कर छुटकारा पाया।

किन्तु कबूलियत देने के पीछे ही हर राम ने जमींदारों से जमा तलब किया। जमींदारों को एक पैसा देना भी साध्य नहीं। जमा अदा के लिये हर-राम ने उन की समुदाय निष्कर सीर की ज़मीन और गृह सामग्री सब को नीलाम कराना आरम्भ किया। अत्यल्प मूल्य में इन्हीं सम्पूर्ण ज़मीन को देवी सिंह के आदमी क्रय करने लगे। किन्तु इस में भी दावे की जमा अदा नहीं हुई। जो कुछ

अदा होती, वह सब ही अब्वाब में वसूल पड़ती; उस से जमा को दावी कुछ भी नहीं चुकती तब ज़मींदारों को हर राम और बंदी कर बेतों से पिटाने लगा। ज़मींदारों के परिवार की स्त्रियों तक को कचहरी में लाकर उन को अपमान किया। जिन सब ज़मींदारों ने ज़्यादा जमा में कबूलियत दे कर गो-पृष्ठारोहणसे पूर्व्वमें छुटकारा पाया था, अब उन सबों में से प्रत्येक को ही एक एक बार उसी गोपृष्ठ पर आरोहण करना पड़ा। देबी सिंह के मनुष्य पीछे पीछे डंका बजा कर, उनको ग्राम के चतुर्दिक् घुमा लाने लगे।

इस ओर ज़मींदारों के अधीन की प्रजाओं को पकड़ कर ज़मींदारों की प्राप्य जमा, उनलोगों से अंगरेज़ों को देने के लिये कहा। प्रजाओं को जमा देना साध्य नहीं था। तब उन लोगों के हल गाय बैल सबको नीलाम कराने लगा। क्या ज़मींदार, क्या प्रजा सबों पर ही घोर अत्याचार और निष्ठुरता का बर्त्ताव होने लगा।

इन्ही सम्पूर्ण ज़मींदार, प्रजा और उनके परि-वार की स्त्रियों के साथ जैसा अत्याचार हुआ था, वह दिनाजपुर के कारागार की अवस्था लिखने

के समय ही किञ्चित् लिखा गया है। इन्ही सब विषयों को फिर सविस्तर लिखने का कोई प्रयोजन नहीं है। संक्षेप में केवल यही लिखते हैं कि दिनाजपुर की अत्याचार से पीड़ित प्रजा और ज़मींदार गण अन्त में जंगल में भाग कर व्याघ्र भालू प्रभृति हिंसक जन्तुओं के मुख में आश्रय लेकर, देबी सिंह के अत्याचार से शान्ति पा सकते थे, किन्तु रंगपुर के ज़मींदार एवं प्रजाओं को यह उपाय भी नहीं रहा। हर राम बड़ा धूर्त्त था। कोई ज़मींदार क्या प्रजा भाग न सके; इस लिये ग्राम ग्राम में चौकीदार नियुक्त किया। इन्ही सकल चौकीदारों के बेतन के निमित्त ज़मींदारों पर और "चौकि बन्धि" नामक एक नया अब्वाब लगाया गया।

इन सब चौकीदारों ने फिर सर्बदा ही निराश्रय प्रजाओं के परिवार पर घोर अत्याचार करना आरम्भ किया। अनेकानेक प्रजा अपनी स्त्री और कन्या का अपमान सह न सके, उद्बन्धन से (फांसी से) प्राण त्याग करने लगे।

इस्ट इण्डिया कम्पनी के गवर्नर जनरल हेस्टिङ्गस ने घूस के रुपया संग्रह करने के निमित्त

नरपिशाच देवी सिंह, हर राम की नांई पापात्माओं के द्वारा इस भांति देश बिध्वंश करना आरंभ किया।

ऐसे अत्याचार निबन्धन से दिनाजपुर की भांति रंगपुर में भी सब जिन्सों का मूल्य बिलकुल ही कम हो गया है। रंगपुर में तमाखू अधिक उत्पन्न होती है किन्तु अधिकांश तमाखू के खेत गिरी अवस्था में पड़ रहे हैं। और जो कुछ तमाखू इन कई एक वर्षों में उत्पन्न हुई थी, उसके भो ग्राँहक नहीं मिले। देश प्रचलित अत्याचार से बिदेशीय बणिक् तब रंगपुर में प्रवेश करने का भी साहस नहीं करते। रंगपुर दिनाजपुर एकदम ही स्मशान भूमि हो गये।

हर राम ने इसी प्रकार अत्याचार करके कितना ही रुपयां अदा किया। किन्तु देवी सिंह इस्से भी संतुष्ट नहीं हुए। उसने और भी अधिक रुपया वसूल करने के लिये हर राम को आज्ञा भेज दी। दिनाजपुर में स्वयं देवी सिंह ने १८ प्रकार के अब्वाव लगाया था किन्तु हर राम रंगपुर में २१ प्रकार के अब्वाब वसूल करने लगा। हर राम ने देवी सिंह के निकट लिखा, कि कृषक गण में अनेकों

ने ही गृह के समुदाय द्रव्य सामग्री बिक्रय किया है। अब वह लोग अपनी अपनी संतान संतति पर्य्यंत बिक्रय करते हैं। किन्तु ग्राहक नहीं मिलते, सुतरां रुपया अदा में कुछ बाधा होती है। देवी सिंह हर राम का यह पत्र पाकर उससे अत्यन्त असन्तुष्ट हुए पर हर राम को बरखास्त नहीं किया। हर राम को वह बिशेष कार्य्य दक्ष जानते थे। ११८८ साल के आषाढ़ मास में उसने हर राम के संग एकत्र तहसील वसूल का कार्य्य करने के लिये सूर्य्यनारायण को नियुक्त किया। सूर्य्य नारायण ने हर राम से भी अधिक कार्य्य दक्षता का परिचय देने के लिये फिर ज़मींदार, प्रजा और इनके परिवार की स्त्रियों के साथ घोर निष्ठुर आचरण आरम्भ किया। किन्तु इस से भी एक भी रुपया अदा नहीं हुआ इस के पश्चात् और देवी सिंह ने अपने कनिष्ट भ्राता भेकधारी सिंह को रङ्गपुर प्रेरण किया। भेकधारी सिंह विविध प्रकार के दण्ड देकर भी रुपया वसूल न कर सके! किस प्रकार अदा करावेंगे, हर राम की दुष्टता से ज़मींदार प्रजा सब हो धन हीन, हो गये थे उन लोगों को और एक पैसा भी देना साध्य

नहीं था। देवी सिंह ने जब देखा कि भेकधारी सिंह के द्वारा भी कार्य्य उद्धार न हुआ, तब ११८९ साल के अगहन मास में स्वयं रङ्गपुर को आये। उस ने प्रजा और ज़मींदारों के भिन्न, महाजनों पर भी अत्याचार करना आरम्भ किया। देवी सिंह के इस अंत के अत्याचार से प्रजा गण कह उठे—"प्राण जाय तो जाय, अत्याचारियों के रक्त से मृत बन्धु बान्धवों का तर्पण करेंगे।" इतने दिनों के अत्याचार के पश्चात् निर्बोध रङ्गपुर बासियों के ज्ञान का उदय हुआ। अत्याचार के रोकने ही का सङ्कल्प किया। किन्तु पूर्व में इसी शुभ बुद्धि के उदय होने से इतनी यन्त्रणा भोग नहीं करना पड़ता। हीन बुद्धि बंगालियों की निद्रा और कभी भी सहज में भङ्ग नहीं होती है। सुतरां चिरकाल ही उन को इसी प्रकार दुर्दशा ग्रस्त होना पड़ता है।

———

एकादश अध्याय

न.नकु

बेला ढल गई है। देवी सिंह की दिनाजपुर, की तहसील कचहरी के कारागार के बन्दीगण प्रायः सब हो भूमि तल में पड़ रहे हैं। कोई २ शरीर की वेदना से चीण स्वर से रोदन करते हैं, कोई २ पूर्णतः अचैतन्य हो पड़ रहे हैं। एक रमणी के गोद का बालक प्रहार से और अन्न के अभाव से मर गया है। रमणी पुत्र शोक से और अपने शरीर की यातना से पूर्णतः चिप्त हुई है! वह कभी हंसती है, कभी रोती है, कभी गाती है।

वृद्ध रामानन्द गोस्वामी को बरकन्दाज गण कल यहां लाये हैं, वह दो दिवस से चैतन्य हीन हो के पड़े हुए हैं, उनको पकड़ कर बरकन्दाजों ने बहुत मारा था। उस प्रहार के पश्चात दस बारह कोस बरकन्दाजों के संग रींगते आये हैं। जो रामानन्द गोस्वामी पाल्की के भिन्न कभी शिष्य गण के घर आना जाना नहीं करते थे, घाम के समय मूहूर्त्त

के निमित्त घर से बाहर होने में भृत्यगण उनके मस्तकके ऊपर छाता लगाते थे, सैंकड़ों शिष्य जिनकी पादुका मस्तक पर धारण करते थे, ऐसे मनुष्य को दस कोस प्यादे पाव चलना कैसा दुःसाध्य व्यापार है, उसे दुर्ब्बल बंगवासी गण और एतद्देशीय गण अति सहज ही में जान सकते हैं । रामानन्द गोस्वामी की वयस प्रायः सत्तर वर्ष की हो गई है। सुतरां प्रहार और प्यादे पांव चलने से हठात् अधिक अङ्ग चलाने से वह वात रोग से ग्रस्त हो कर ऐसे चैतन्य हीन हो के पड़ रहे हैं। इसी रोग से उनको अकस्मात मृत्यु होने की सम्भावना थी। किन्तु जन्म समय से उनका शरीर आरोग्य था । वह सदाचारी और सच्चरित्र मनुष्य थे । आहारादि के सम्बन्ध में सदैव एक ही प्रकार का नियम पालन करते थे, सुतरां जीवात्मा सहज ही में ऐसे निरोग शरीर से निकल नहीं सकता। इसी से अब तक भी रामानन्द की मृत्यु नहीं होती है; केवल अज्ञान होकर पड़ रहे हैं।

तहसील कचहरी के जमादार रामसिंह, बन्दियों के रहने के गृह के बरामदे में बैठे हैं । एक

चौदह पन्द्रह वर्ष का बालक पहिनी हुई धोती के ऊपर चपकन, उस के ऊपर अट्ट सट्ट एक मोटे कपड़े की दोहर ओढ़ कर बरामदा के सन्मुख वाले आंगन में खड़ा है। बालक घर के भीतर क्या है, उसे देखने के निमित्त, एक दृष्टि से घर के द्वार की ओर ताक रहा है, बालक के प्रशस्त ललाट में बिभूति की रेखा है।

राम सिंह दिनाजपुर के कलेक्टरी के जमादार हैं। उन के पूर्व्व पुरुषों का वासस्थान पंजाब देश है दो तीन पीढ़ी से दिनाजपुर में बास करते हैं। कलेक्टर के दीवान देवी सिंह ने राम सिंह को अपने इजारा तहसील कचहरी के कारागार का अध्यक्ष करके यहां भेजा था। राम सिंह की यहां आने की इच्छा नहीं थी। किन्तु देवी सिंह दीवान हैं दीवान की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सके। इसी से यहां आये हैं तहसील कचहरी में कम्पनी के मनुष्य देख कर ज़मींदार और प्रजा को विशेष भय होगा, इस लिये देवी सिंह ने कलेक्टरी के जमादार राम सिंह को इस कारागार की देख रेख का भार देकर यहां भेजा था राम सिंह

ने यहां आने के लिये पूर्णत: नाहीं किया था, किन्तु दिनाजपुर के कलेक्टर गुडलैड साहेब ठीक एक गुडलैड को भांति (उत्तम बालक की भांति) देवी सिंह के कोई कार्य्य में बाधा नहीं देते थे। विशेषत: उन की स्वयं जो कुछ ऊपरी पावना था, उसे देवी सिंह जुटा देता था कार्य्य कर्म्म सम्बन्ध में वह देवी सिंह के क्रीत दास थे और मेल में वह देवी सिंह के मौसेरे भाई थे। पाठकगण, इस बात को सुन कर आश्चर्य्य न कीजियेगा। गुडलेड और देवी सिंह ये दोनों दो भिन्न देशीय और भिन्न जातीय होने से भी "चोर चोर मौसेरे भाई" थे इस में कोई सन्देह नहीं।

राम सिंह देवी सिंह के तहसील कचहरी में आकर रहने लगे। दिनाजपुर शहर से यह तहसील कचहरी दो कोस की दूरी पर थी।

इस तहसील कचहरी के अत्याचार के देखने से राम सिंह का हृदय अत्यन्त ही व्यथित होता था। राम सिंह ने एक सिक्ख सूबेदार के औरस से जन्म लिया है वह तो कलकत्ता के नौकर या देवी सिंह के समान नर पिशाच नहीं है दस बारह वर्ष से

राम सिंह के पुत्र मर गये हैं उनकी ओर कोई सन्तान नहीं है परिवार में केवल एक स्त्री है।

कारागार के आंगन में चौदह पन्द्रह वर्ष के वयस के बालक को देख कर, राम सिंह ने उसे अपने निकट बुलाया, राम सिंह बालक बालिकाओं को देखने से ही अपने निकट बुलाकर उन से कथा वार्त्ता करने में अत्यन्त अनुराग रखते थे।

राम सिंह के निकट इस बालक के आने पर, इस का अङ्ग सोष्ठव और हंसी युत बदन देख कर वह अतिशय मोहित हो गये। मन ही मन सोचने लगे, कि ऐसे सुन्दर बालक को इस जन्म में और कहीं नहीं देखा, सतृष्ण नयन से बालक के मुख को ओर देख कर उस से प्रश्न किया—

"तुम्हारा क्या नाम है ?"

बालक—"हजूर मेरा नाम नानकु है।"

राम—"तुम्हारा घर कहां है ?"

बालक—"हुजूर मेरे बाबा का घर गया के ज़िले में था। बाबा पुरनया में जमादार थे छोटी अवस्था में मेरे मा बाप मर गये पश्चात् इस देश

की एक ग्वालिन ने मेरा पालन कर बड़ा किया है उसी ग्वालिन को मा कहता हूं।"

राम—"यहां क्या चाहते हो?"

बालक—हुजूर अब बड़ा हुआ हूं कहीं नौकरी मिले तो नौकरी करूंगा। इङ्गालियों की नौकरी न करूंगा। बङ्गाली जात बड़े ही दुष्ट होते हैं काम करा कर पूरी तलब नहीं देते।

राम—"तुम कौन काम कर सक्ते हो?

बालक—जी सब काम कर सक्ता हूं। तमाखू चढ़ा सक्ता हूं, पानी ला सकता हूं, भांग घोंट सक्ता हूं।

राम सिंह बालक के अङ्ग सौन्दर्य को देख कर पूर्व्व ही मोहित हुए हैं। अब इस की सुमधुर कन्ठ ध्वनि को श्रवण कर इस के ऊपर उन का गाढ़ अनुराग का सञ्चार हुआ। बालक को अपने गृह में रखने के निमित्त उन को अत्यन्त ही इच्छा हुई। बालक से और प्रश्न किया।

"कितनी तलब पर काम कर सक्ते हो?"

बालक—हुजूर आप अनुग्रह कर जो कुछ देवें उसी से आप का कार्य्य करने में राज़ी हूं।"

राम—अच्छा मासिक १) रुपया वेतन मिलेगा तुम हमारा कार्य्य करो।

बालक ने राम सिंह के कार्य्य में नियुक्त हो कर उन के निमित्त भांग घोंटना आरम्भ किया। राम सिंह प्रत्येक दिन सायंकाल को भांग पीते थे। बालक ने थोड़े ही समय में बहुत अच्छी भांग तइयार कर दिया। भांग तइयार करने के विषय में इसे निपुण देख कर राम सिंह ने विशेष आनन्द पाया किञ्चित् काल के पीछे घर में से अति क्षीण स्वर से एक बन्दी के रोने का शब्द सुनाई पड़ा। बालक ने राम सिंह से कहा "हुजूर यह मनुष्य कुछ जल चाहता है, जल दे दूं?"

राम सिंह—देव बाबा थोड़ा पाणी उस को देव हारामज़ादा देबी सिंह उन लोग को बहुत तकलिफ़ दिया।

बालक इस सुयोग में गृह के भीतर प्रवेश करके इस ओर उस ओर देखने लगा। घर के एक पार्श्व में देखा कि रामानन्द गोस्वामी अचैतन्य हो कर पड़े हुए हैं। अन्यान्य कई एक बंदियों को थोड़ा पानी पिलाकर पश्चात् रामानन्द के पास गया।

रामानन्द सब प्रकार से ज्ञान शून्य हुए पड़े हैं सैंकड़ों चेष्टा करने पर भी उन की जाग्रत न कर सका तब रामानन्द के मस्तक पर जल सींचने लगा। कुछ काल के पश्चात् उन्हीं ने हां करके जल पीने की इच्छा प्रकाश की। बालक उन के मुख में थोड़ा २ जल देने लगा, रामानन्द किञ्चित् स्वस्थ हुए किन्तु इस समय भी वह पूर्ण चैतन्य लाभ न कर सके। बालक फिर बाहर आया राम सिंह के आज्ञानुसार दो एक कार्य्य करके, कारागार से कुछ दूर एक मठ में चला गया। वहां एक बूढ़ा स्त्री और दो युवक हैं बालक ने इन लोगों के निकट आकर कहा "रूपा कहीं से थोड़ा दूध ला दे सक्ते हो? विश्वास होता है, ठाकुर ने पकड़ा कर आने के पश्चात् कुछ भी आहार नहीं किया है वह अचैतन्य हो कर पड़े हुए हैं।"

रूपा उसी समय दूध की खोज में चला गया।

बालक ने बूढ़ा से कहा "रूपा दूध ले आवे तब तुम उस को लेकर कारागार के आङ्गन में जाना और नानकु कह कर पुकारना मैं घर में से बाहर आकर दूध ले जाउंगा।"

यह कह कर बालक फिर कारागार में आया किन्तु सायंकाल में राम सिंह कारागार के किवाड़ बन्द कर अपने रहने के गृह में चले गये हैं। बालक कारागार के किवाड़ बन्द देख कर अत्यन्त निराश हो गया। कारागार से किञ्चित् दूर ही राम सिंह के रहने का घर था बालक फिर राम सिंह के निकट जाकर खड़ा हुआ। बालक का आव भाव देख कर राम सिंह ने सोचा, कि उन से कुछ कहने के लिये आया है।

राम सिंह ने पूछा "नानकु मुझ से कुछ कहना चाहते हो?"

बालक ने कुछ सङ्कुचित हो कर कहा "हुजूर एक बात कहने की इच्छा करता हूं, किन्तु बड़ा भय होता है; पीछे आप क्रोध करेंगे।"

राम सिंह ने कहा "कुछ भय नहीं, तुम जो कहना चाहते हो कहो।"

"जो इस कारागार का एक कैदी कुछ दूध पीना चाहता था उस ने तीन दिन से कुछ नहीं खाया है, अपनी मा को मैं ने उस के निमित्त कुछ दूध लाने को कहा है किन्तु कारागार के किवाड़ बन्द हो गये हैं।"

राम सिंह—उस के लिये तुम्हे क्या भय है। यह चाबी लेकर किवाड़ खोल घर में जाव साला देवी सिंह बड़ा बज्ज़ात है इन लोगों को प्राण मार डालता है, बाबा! मैं कुछ नहीं कर सक्ता नहीं तो मैं सब कैदियों को छोड़ देता। कैदियों पर तुम्हारी दया देखकर मैं बड़ा सन्तुष्ट हुआ। बाबा! मेरे पुत्र को भी इसी प्रकार दया कैदियों पर थी।

इस बार्त्ता के कहते ही राम सिंह के चक्षु से बारम्बार अश्रु पतित होने लगा।

नानकु चाबी लेकर किवाड़ खोलने लगा कारागार के पहरा वाले बरकन्दाज़ गण ने उसे किवाड़ खोलने में निषेध किया किन्तु राम सिंह ने किवाड़ खोलना कहा है, यह वार्त्ता श्रवण कर उन्हों ने बाधा नहीं दिया।

नानकु के किवाड़ खोलने पर एक वृद्धा स्त्री एक चुकिया में कुछ दूध लेकर कारागार के आंगन में आ पहुंचो। नानकू कह कर पुकारते ही बालक ने बाहर आकर उस के हाथ से दूध की चुकिया लेकर उसे बिदा किया। वृद्धा के विदा हो जाने पर, बालक गृह में प्रवेश करके रामानन्द के मुख में

थोड़ा थोड़ा दूध देने लगा। मस्तक में और जल सिञ्चन किया। किञ्चित् काल के पीछे रामानन्द को संज्ञा प्राप्ति हुई अपने मुख में एक बालक को दूध डालते देख कर क्रोध से कह उठे,—" दुरात्मा देवी सिंह अब मुझे जाति भ्रष्ट करना चाहता है। क्यों तुम मेरे मुख में दूध डालते हो ? हा परमेश्वर मैं ने शूद्र का छूआ जल कभी स्पर्श भी नहीं किया न जाने किस ने मेरे मुख में दूध डाल कर मुझे जाति भ्रष्ट किया। "

बालक ने तब रामानन्द के कान के निकट मुख ले जाकर कहा " भय नहीं—मैं सत्यवती—आप की पुत्र बधू हूं। "

" सत्यवती " यह शब्द वृद्ध के कर्ण कुहर में प्रवेश करते ही, वृद्ध सिंह की भांति गर्ज्जन कर एक बार ही उठ खड़े होकर कहा " हाय परमेश्वर मेरी पुत्र बधू को भी धर लाया है। मैं इसी समय देवी सिंह का मस्तक काट डालूंगा " यह कह कर ही वृद्ध फिर अज्ञान होकर भूमितल में गिर गया। कारागार के प्रहरी गण बाहर से घर में आ कर पूछने लगे " क्या हुआ। "

बालक ने कहा यह वृद्ध कैदी यन्त्रणा से एक बार ही पगला हो गया है।

प्रहरी गण को बालक की वार्त्ता पर विश्वास न करने का कोई कारण नहीं था। देवी सिंह के कारागार वासी हत भाग्यों में अनेक ही चिप्त हो कर कारागार परित्याग करते थे। किन्तु प्रहरी गणों के चले जाने पर, सत्यवती अत्यन्त चिन्ताकुल चित्त से स्वयं श्वशुर के शिर के निकट बैठ कर सोचने लगी। उस का कमल बदन अत्यन्त खिन्न हुआ। फिर वृद्ध के मस्तक पर जल सिंचन करने लगी। प्राय: एक घंटा जल सिंचन करने पर, रामानंद फिर भी चैतन्य हुए। सत्यवती ने हस्त से चांप कर फिर कर्ण के निकट मुख रख कर कहा—" आप को भय नहीं है—आप कोई वार्त्ता न कीजिये मैं पुरुष के भेष से आप को उद्धार करने को आई हूं—मुझे कोई पकड़ नहीं लाया है। "

यह वार्त्ता वृद्ध के कर्ण कुहर में प्रवेश करते ही धीरे धीरे उन्हे ज्ञान का संचार होने लगा। कुछ काल स्तम्भित भाव में रह कर, वृद्ध ने चीण स्वर से कहा " पुत्री! क्यों तुम मेरे लिये व्याघ्र के मुख

में आ पड़ी हो तुम्हें चीन्ह ले तो सर्व्वनाश होगा!"

छद्म वेशी बालक ने कहा "आप को कोई भय नहीं मैं दो एक दिन में आप को कारागार से मुक्त कर सकूंगी आप इस दूध को पान कीजिये, मुझे यहां अधिक न रहने दीजियेगा।"

वृद्ध दूध पान करके किंचित् स्वस्थ हुए। सत्यवती ने किवाड़ बन्द करके राम सिंह के निकट जाकर कारागार को चाबी लौटा दी।

—*—

द्वादश अध्याय ।

कारा मुक्त ।

नानकु ने दो ही दिन में राम सिंह का स्नेहाकर्षण किया । राम सिंह के अब सन्तानादि कुछ नहीं है । वह सोचने लगे कि नानकु अवश्य कोई भद्र हिन्दुस्थानी का सन्तान होगा, आपत्ति ही के करिये नोकरी करने आया है, अतएव नान्कु से चाकरी न करा कर दत्तक पुत्र बनाने से, उन की स्त्री विशेष आनन्द पावेंगी, और वह अपने पुत्र शोक को अनेक परिमाण से भूल सकेंगी । ऐसी चिन्ता करके राम सिंह ने स्थिर किया कि जितना शीघ्र हो सके, इस कारागार के कार्य्य से अवसर प्राप्त होने पर ही, नानकु को सङ्ग लेकर अपने दिनाजपुर के गृह को चले जायेंगे । राम सिंह की अब और चाकरी करने की इच्छा नहीं है । उन की चालीस वर्ष से भी अधिक वयस हो गई है देवी सिंह ने उन को इसी कारागार के कार्य्य में नियुक्त किया है इसी से वह निर्ज्जन में बैठ कर उसे साला बज़्ज़ात्

इत्यादि सुललित शब्द से कथन करने लगे। किन्तु प्रकाश में कुछ भी नहीं कह सके। देवी सिंह कलेक्टर के दीवान हैं देवी सिंह चाहैं तो उन को बरखास्त अनायास ही करा दे सके हैं।

इस ओर सत्यवती राम सिंह के निकट से अवसर पाने पर कारागार के निकटवर्त्ती मठ में जा कर वृद्धा दासी, जगा और रूपा के साथ विचार करती हैं। किस उपाय का अवलम्बन करने से रामानन्द को कारागार से मुक्त कर सकेंगी उसी की चिन्ता करने लगीं, रामानन्द की उठने की शक्ति नष्ट हो गई है। उठ कर खड़े होने को शक्ति नहीं उन के रींग जाने की सामर्थ रहने से प्रथम दिन ही सत्यवती उन को कारागार से मुक्त कर सकी थी अनेक चिन्ता करके रूपा ने कहा—

"बहू! रात्रि में बूढ़े ठाकुर को कैदियों के घर के बरामदे में सुलाने का बन्दोबस्त करने से मैं अनायास ही उन को लेकर भाग सका हूं।"

जगा ने भी इस बात को पुष्ट किया पश्चात् इन लोगों में यह विचार स्थिर हुआ, कि रामानन्द को कारा गृह के बरामदा में सुला रक्खेंगे पश्चात्

छूपा चाहि जगा उन को गोद में लेकर पलायन करेंगे।

सत्यवती ने यही विचार स्थिर कर सायंकाल को राम सिंह के निकट प्रत्यावर्त्तन किया। अन्य दिनों की भांति राम सिंह के निमित्त भांग घोंटने लगी। प्रथम रात्रि को जो चार मनुष्यों का पहरा था, उन को भी किञ्चित् भांग देना अङ्गीकार किया। भांग तैयार होने पर राम सिंह सायंकाल को भांग पी कर किवाड़ बन्द करने चले। नानकु ने तब उन के निकट जाकर कहा— "हुजूर यह वृद्ध कैदी कहता है कि कल रात्रि को घर में होरा होने से इन्हें पूर्ण निद्रा नहीं आई, वह बरामदा में सोना चाहता है, उसे चलने की शक्ति नहीं है कि भाग जावेगा उसे बरामदा में सोने दीजियेगा?

राम सिंह ने कहा—"उस की इच्छा बरामदा में सोने की है तो सो सक्ता है, जो कैदी भाग सकें भाग जायें अब कितने दिन साला देबी सिंह इन को दुःख देगा।"

तब नानकु ने वृद्ध रामानन्द को अति कष्ट से गोद में लेकर बरामदा में ला रक्खा। रामानन्द बरामदे ही में सोये रहे।

* * * * *

प्रथम रात्रि के प्रहरी गण ने आज भली भांति भांग खाया है। रात्रि की नौ बजे के समय ही उनको निद्रा आ गई ! रात्रि घोर अन्धकार है। रूपा, जगा और वृद्धा दासी कारागार से थोड़ी दूर पर खड़े हैं प्राय: डेढ़ प्रहर रात्रि के पश्चात नानकु राम सिंह के घर से बाहर हो कर कारागार के निकट आया। रूपा और जगा तब नानकु के निकट गये। नानकु उनको संग लेकर कारागार के बरामदे में गया। रामानन्द गोस्वामी की बात रोग हुआ है। प्राय: वह चैतन्य ही नहीं रहते हैं; और बीच बीच में उनको ज्ञान का सञ्चार भी होता है। रूपा रामानन्द को गोद में लेकर धीरे धीरे कारागार के आंगन में आया। इसी समय द्वितीय प्रहर के प्रहरी गण में से एक बरकन्दाज़ ने जागकर देखा, कि रामानन्द को गोद में लेकर रूपा भागता है। उसके पीछे पीछे जगा, वृद्धा दासी और नानकु शीघ्रता से गमन करते हैं।

"कैदी भागा जाता है," "कैदी भागा जाता है" बरकन्दाज़ चिल्ला उठा।

उसके चिल्लाने से प्रायः बारह चौदह प्यादे और बरकन्दाज़ जाग कर जगा और रूपा के पीछे दौड़े।

रूपा ने रामानन्द को जगा के गोद में देकर कहा "तुम इन्हें लेकर भागो। मैं यहां खड़ा हूं। इन लोगों के संग प्राण सौंप कर मल्ल युद्ध करूंगा। उसी से फिर ये लोग तुम्हारे पीछे पीछे न जा सकेंगे। यहां रहने से केवल मुझही को धरने की चेष्टा करेंगे।"

सत्यवती ने कहा "वे तुमको पकड़ सके तो अवश्य ही मार डालेंगे।"

रूपा तुरन्त ही कहने लगा "मेरे मरने से भी यदि तुम भाग सको तो उसमें कोई हानि नहीं। मुझ एक के मरने से क्या? किन्तु तुमको धर सकने से सर्व्वनाश होगा। तुम भागो भागो—शीघ्र शीघ्र भागते जाव।"

जगा रूपा का कनिष्ट भाई है। उसे रूपा का विशेष स्नेह है। इस लिये जगा को इनके संग जाने को कह कर, अपने प्राण की आशा परित्याग कर के बांस की लाठी हाथ में लेकर खड़ा रहा। तीन

चार बरकन्दाज़ों के निकट आते ही हाथ की लाठी से दो आदमियों को एक बार ही यमपुर को भेज दिया। पश्चात दस ग्यारह बरकन्दाज़ एकत्र होकर उस पर टूट पड़े। बरकन्दाज़ गण निद्रा से जाग कर छूछे हाथ आये थे। उन लोगों के पास अस्त्र शस्त्र कुछ भी नहीं था। रूपा ने सोचा कि अनायासही एक ओर दौड़ कर भाग सकता हूं। किन्तु पीछे बरकन्दाज़ गण रामानन्द और सत्यवती को धरने के लिये आगे बढ़ेंगे इसी आशंका से खड़े हो कर इन लोगों से युद्ध करने लगा। क्रमशः चार पांच आदमियों का प्राण संहार किया। पश्चात लाठी ले कर और भी मनुष्य आने लगे। रूपा भागने के अभिप्राय से उत्तर की ओर दौड़ने लगा। रात्रि अन्धकार है। अकस्मात वह एक गड़हे में गिर गया। किन्तु बरकन्दाज़ गण उसे देख न सकने से उत्तर की ओर दौड़ने लगे। इस ओर जगा रामानन्द को ले कर क्रमशः पूर्व की ओर भागा।

रामसिंह बरकन्दाज़ों का गोल माल सुन कर जाग उठे। नानकु बाहर से कारागार में अन्य

मनुष्यों को ला कर एक कैदी को लेकर भागा है, ऐसा सुन कर वह अत्यन्त आश्चर्यित हुए किन्तु नानकु पर उनके प्रगाढ़ स्नेह का सञ्चार हुआ था। अब भी नानकु से अनुराग है। नानकु के विरुद्ध उन्हीं ने कोई बात नहीं कहा, केवल देवी सिंह को ही गाली देने लगे। नानकु को वह दत्तक पुत्र न रख सके, नानकु भाग गया है यह सब देवी सिंह का ही दोष सोच कर राम सिंह समस्त रात्रि केवल देवी सिंह की माता, भगनि, लड़की, मौसी इत्यादि उन के सर्ब आत्मीय स्वजनों को अतिशय अश्लील भाषा से गाली देने लगे। समस्त रात्रि उनको निद्रा न आई।

एक बरकन्दाज़ ने उनको क़ारागार के अन्य कैदियों की गणना करने के लिये कहा। रामसिंह ने क्रोध से कहा "हाम अब कैदी लोक को छोड़ देयेगा—शाला देवी सिंह का वास्ते हामारा नानकु भाग गिया——शाला कुम्मात होकन का बेनामि ईज़ारा लि कर मुल्लुक पयमाल किया" ।

——

त्रयोदश अध्याय।

ये देवता हैं या मनुष्य हैं ?

रात्रि घोर अन्धकार है। प्राणियों का कोलाहल नहीं है। जगा रामानन्द गोस्वामी को कंधे पर धर कर क्रमशः मालदह की ओर आगे बढ़ा। वृद्धा दासी और सत्यवती जगा के पीछे पीछे चलती हैं। इनके गङ्गारामपुर की सीमा पर पहुंचते ही रात्रि समाप्त हुई। पूरे आठ कोस से जगा इस वृद्ध ब्राह्मण को कंधे पर लेकर आया है इसके पूर्व दिन सायंकाल से उसे आहार करने का भी सुभीता नहीं हुआ है अब वह बहुत ही थक गया है। किन्तु प्रकाश पथ के पार्श्व में बैठ कर विश्राम करने का इनको साहस नहीं हुआ। रास्ते से कुछ दूर पर एक जङ्गल में प्रवेश कर विश्राम करने लगे। रूपा जैसे जगा से अत्यन्त स्नेह करता था, जगा भी अपने ज्येष्ठ भ्राता रूपा से अत्यन्त अनुराग करता था जगा ने अब जङ्गल में प्रवेश कर रूपा के निमित्त रोना आरम्भ किया। सत्यवती देवी और वृद्धा दासी भी

अत्यन्त बिलाप और संताप करने लगीं। अब तक सत्यवती के संग दो विश्वासी मनुष्य थे। किन्तु रूपा ने इनके उद्धार करने के निमित्त अपनी ही इच्छा से प्राण त्याग कर दिया है। जिस अवस्था में रूपा को छोड़ आये हैं उससे रूपा की मृत्यु सम्बन्ध में इनको कुछ भी सन्देह नहीं था। सोचने लगे कि रूपा का निश्चय ही देवी सिंह के आदमियों के हाथ से प्राण जायगा। रूपा के शोक में जगा से भी सत्यवती देवी अधिक कातर हुई थी। वह निरंतर उसके लिये बिलाप करने लगी।

रामानन्द गोस्वामी अब तक प्रायः चैतन्य हीन ही थे। अब उनको किञ्चित् ज्ञान का उदय हुआ प्रभात काल में बात रोग ग्रस्त जनों को किञ्चित् ज्ञान होता है। जिस भांति वह कारागार से मुक्त हुए हैं, और जिस प्रकार रूपा ने स्वयं प्राणविसर्ज्जन कर उनके भागने का सुयोग कर दिया था, उसे आद्योपान्त सुन कर, वह भी रोने लगे। इनके बिलाप और संताप में बेला प्रायः डेढ़ प्रहर हुई। रामानन्द तब एक बार ही शुष्क कन्ठ हो गये। सत्यवती ने श्वशुर की तृष्णा निवारणार्थ

जगा को निकट के जलाशय से जल लाने को कहा।

वह लोग जिस स्थान पर विश्राम करते थे, वहां बहुत से बेल वृक्ष थे। सैंकड़ों पके हुए बेल वृक्षों के नोचे पड़े हैं। गङ्गारामपुर प्रायः सर्व्वत्र ही बेल वृक्ष परिपूर्ण है। प्रसिद्ध है, कि प्राचीन काल में इसी गंगारामपुर के निकटवर्त्ती किसी स्थान में बाण राजा की राजधानो थी। वह शैव थे। इसी से उनका राज्य बेल वृक्ष परिपूर्ण हैं।

जगा के जल लाने पर सत्यवती वृक्ष तल से कई एक बेल बीन लाई! केवल जल द्वारा बेल का शरवत बना कर वृद्ध श्वशुर की क्षुधा निवृत्ति की। पश्चात जगा और वृद्धा दासो को भी बेल का शरबत तैयार कर दिया। शरबत पी कर सब लोग किञ्चित स्वस्थ हुए। पश्चात बेला ढलने पर मालदह की ओर चलने लगे। दूसरे दिन डेढ़ प्रहर के समय पंडुआ के जङ्गल में आ पहुंचे। इस संपूर्ण पथ में जगा रामानन्द को कंधे पर लेकर चलता था।

उन्हीं ने पूर्व्व ही स्थिर किया था कि पंडुआ के जंगल में किञ्चित काल के लिये लुक रहेंगे। पश्चात देवी सिंह का अत्याचार किञ्चित कम हो जाने

पर अंत में रामानन्द गोस्वामी के पैतृक घर में जाने की चेष्टा करेंगे। रामानन्द के मालदह को धर्मार्थ ज़मीन भी प्राय: आठ नो वर्ष से ज़ब्त हो गई है। वारेन हेस्टिङ्गस की दुष्टता से देश के प्राय: सभी मनुष्यों की निष्कर ब्रह्मत्व और देवत्व ज़मीन ज़ब्त हुई थी। किन्तु रामानन्द को उनके घर से अभी तक किसी इजारेदार ने बेदख़ल नहीं किया। वहां घर शून्य पड़ा हुआ है। बक़ाया जमा के लिये ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आदमी क़ैद करेंगे, उसी आशङ्कासे रामानन्द पैतृक घरको परित्याग कर जङ्गलों में रहते थे।

पंडुआ के जङ्गल में पहुंचते ही, जगा जङ्गल के मध्य में किसी जलाशय के निकटवर्ती स्थान का अनुसन्धान करने लगा। जंगल में बास करने के समय निकट में जलाशय न होने से, उस स्थान में रहने का सुभीता नहीं होता है। जगा ने जँगल में कुछ दूर जाकर एक पुष्करणी के किनारे दो पर्ण कुटी देखी। उनमें से एक कुटी शून्य पड़ी हुई है, और एक कुटी में एक विधवा रमणी योगासन पर बैठ कर, फूल चन्दन द्वारा एकाग्रचित्त से अपने

हाथ मे बनाये मृत्तिका के शिवलिङ्ग का अर्च्चन कर रही है। इसे देखते ही जगा के मनमें इस प्रश्न का उदय हुआ—यह देवता हैं या मनुष्य! किन्तु स्त्री से कोई बात प्रश्न नहीं किया। विशेषत: रमणी नेत्र मूंदे बैठ कर ध्यान करती थीं, उनका ध्यान भङ्ग करने का जगा को साहस नहीं हुआ।

जगाने ऐसी सुबिमल मूर्ति कभी नहीं देखी थी। वस्तुत: इस ध्यान शीला रमणी को देखने से कोई इसे मनुष्य नहीं सोच कर कह सकता। जगाने बाल्य काल से श्रवण किया है, कि जंगल में अनेकानेक देव देवी बास करते हैं। इसी से उसने सहजही में सिद्धान्त कर लिया, कि यह निश्चय ही देव कन्या होगी। किन्तु इन से वार्ता करना उचित है या नहीं, यही चिन्ता करने लगा। अनेक चिन्ताओं का सोच बिचार किया कि जंगल में जो सकल अप देवता या भूत प्रेत रहते हैं। वेही लोगों का अनिष्ट करते हैं। अच्छे देवता गण कभी लोगों का अनिष्ट नहीं करते। इन देव कन्या के मुख में जैसा दया और स्नेह का भाव लक्षित होता है, उस से तो यह अच्छी देवी ही होंगी। सुतरां

इनका आश्रय पाने से इस विपद के समय में अनेक उपकार होने की सम्भावना है। यही सोच कर जगा ने मन में स्थिर किया, रमणी की शिव पूजा समाप्त होने पर उन को प्रणाम कर उनके शरणागत हूंगा।

प्रायः अर्द्ध घन्टा पर रमणी ने, अपने पहिरे हुए वस्त्र के अञ्चल को गले में डाल कर प्रणाम कर के कहा—"भगवन देवादि देव महादेव इस चिर दुखिनी को यदि और भी दुःख कष्ट देना हो तो दो,—किन्तु प्रेमानन्द को आशीर्वाद दो—शत्रु हस्त से उनको निरापद रक्खो"।

"प्रेमानन्द को आशीर्वाद दो" "उनको निरापद रक्खो" ये शब्द जगा के कर्ण में पवेश करतेही वह चौंक उठा। सोचने लगा यह कौन हैं जो प्रेमानन्द के मंगल की अकांक्षा करती हैं। मालदह में हमारे प्रेमानन्द के भिन्न और कौन प्रेमानन्द हैं, उसे नहीं जानता। किन्तु हमारे प्रेमानन्द की तो प्रायः बारह बरस हुए मृत्यु हुई है।

रमणी अब भी पृथिवी में मस्तक लगाकर पाठ करती है। जगा अनिमिष नेत्र से रमणी की ओर

देखता रहा। कुछ काल पर रमणी का स्तव पाठ समाप्त हुआ। खड़ी होकर पीछे की ओर देखते ही उसने देखा कि कुटि के बाहर एक दीर्घाकार कृष्ण वर्ण पुरुष खड़ा है। रमणी इसे देख कर अत्यन्त शंकित हुई। किन्तु जगा ने तुरंत ही भूतल में लोट कर उसे प्रणाम किया, और अति विनीत भाव से प्रश्न किया—"मा! आप कौन हैं? और किस प्रेमानन्द के मङ्गल की आकांक्षा करके शिव पूजा करती हैं?"

रमणी ने जगा को कुछ उत्तर नहीं दिया वह मौनावलम्बन ही किये रही।

जगा और विनीत भाव से कहने लगा "मा हम बड़े विपद में पड़े हैं इस जंगल में कुछ काल भागकर रहेंगे इसी से यहां आये हैं। हमारे गोस्वामी महाशय के पुत्र का नाम भी प्रेमानन्द था। आपके मुख से वही प्रेमानन्द का नाम श्रवण कर आपका परिचय जानने की इच्छा हुई है।"

रमणी इस बात को सुन कर कुछ शान्त हुई उन्हीं ने पूर्व्व में सन्देह किया था, कि यह गङ्गा-गोबिंद सिंह का कोई गुप्त चर होगा। किन्तु अब

वह आशङ्का दूर हुई। उन्हों ने जगा से प्रश्न किया "तुम किस प्रेमानन्द के पिता की वार्त्ता कहते हो?"

जगा। जी गोड़ के रामानन्द गोस्वामी के पुत्र का नाम प्रेमानन्द था। प्रायः दस बारह वर्ष हुए पुरनियां के जेल में प्रेमानन्द की मृत्यु हुई है।

रमणी। रामानन्द गोस्वामी अब कहां हैं?

जगा। जी आप का परिचय न पाने से, उस वार्त्ता के कहने का साहस नहीं होता है।

रमणी। मेरे द्वारा तुम्हारे कोई अनिष्ट होने की सम्भावना नहीं है।

जगा। आप कौन हैं? मनुष्य हैं या देवता।

रमणी। मैं कौन हूं उसके जानने का तुम्हें कोई प्रयोजन नहीं। रामानन्द गोस्वामी कहां हैं वही कहो।

जगा। जी आप हम लोगों का कोई अनिष्ट तो न करेंगी?

रमणी। रामानन्द गोस्वामी का कोई अनिष्ट करना दूर रहा मैं सर्वदा उनकी मंगल कामना करती हूं।

जगा। आप रामानन्द गोस्वामी को क्या चीन्हती हैं ?

रमणी। उनका नाम सुनती हूं। परन्तु उनको कभी नहीं देखा।

जगा। किस से उनका नाम सुना है ?

रमणी। उनके पुत्र के मुख से उनका नाम सुना है।

जगा। उनके पुत्र से आप को कहां देखा देखी हुई ? प्रायः बारह वर्ष हुए उनकी मृत्यु हुई है।

रमणी। (किञ्चित हास्य करके) तुम निश्चय जानते हो उनकी मृत्यु हुई है ?

जगा। जी हां निश्चय जानता हूं उनकी विधवा स्त्री और उनके पिता के संग ही संग में रहता हूं।

रमणी। उनकी स्त्री ने कैसे विश्वास किया, कि उनके स्वामी की मृत्यु हुई है ?

जगा। क्या उन्हों ने नहीं किया है ? वैसा न करने से सादा कपड़ा क्यों पहनेंगी ? विधवा की भांति हविष्य भोजन क्यों करेंगी ?

रमणी। प्रेमानन्द ने परमासाध्वी सुनीति देवी के

गर्भ से जन्म लिया है। देवी सिंह या गंगा गोविन्द सिंह को कुछ भी सामर्थ्य नहीं, कि उनका प्राण बिनाश कर सकें।

जगा और रूपा ये दोनों भाई सुनीति देवी पर जननी से भी अधिक भक्ति करते थे। सुनीति देवी का नाम सुनतेही जगा का हृदय अत्यन्त द्रवित हुआ, उसके चक्षु से कृतज्ञता के अश्रु पात होने लगे, और इस रमणी से वार्ता लाप करने में उसका और भी साहस बढा। उसने तब रमणी के सन्मुख किञ्चित आगे बढ़ कर उनके पद पर मस्तक धर कर कहा—

"मा! आप देवी हैं या मानवी। प्रेमानन्द ठाकुर अभी तक बचे हैं यह बात उनके बृद्ध पिता सुनें तो अत्यन्तही सुखी होंगे वह रोग शोक से पूर्णतः अज्ञान हो गये हैं। प्रेमानन्द ठाकुर के पिता और स्त्री इसी जंगल में हैं। हम देवी सिंह के जेल से भाग कर आज यहां पहुंचे हैं।"

जगा की वार्ता श्रवण कर रमणी ने प्रेमानन्द के पिता और स्त्री को अपनी कुटि में ले आने को कहा।

जगा तब उर्द्ध स्वास भागता चला और सत्यवती से जाकर बोला "बहू। बड़ी शुभ खबर—ठाकुर से अभी कहो—अभी हमारे प्रेमानन्द ठाकुर अभी तक बचे हैं। उनकी मृत्यु नहीं हुई है।"

सत्यवती, रामानन्द और वृद्धा दासी जगा की बातों का अर्थ कुछ भी नहीं समझ सकीं। प्रायः दस बारह बरस से उन को दृढ़ विश्वास है. कि प्रेमानन्द की मृत्यु हुई है। वह आश्चर्य युक्त हो कर जगा का मुख देखते रहे। जगा बारम्बार कहने लगा "प्रेमानन्द ठाकुर अभी तक जीते हैं"।

सत्यवती देवी ने किञ्चित काल के पीछे जगा से प्रश्न किया "तुमने क्या उन को. इस जंगल में कहीं देख पाया है?"

जगा। जी मैंनें अब तक उनको नहीं देखा है। इसीं जंगल में एक देव कन्या हैं। उन्हों ने कहा है कि प्रेमानन्द अभी तक जीवित हैं। वहां जाने से वह सम्पूर्ण बात आप से कहेंगी।

सत्यवती ने फिर कहा किसी ने तुमको ठगने के लिये तो ऐसा नहीं कहा?

जगा। कभी नहीं। वह सत्यही देव कन्या

हैं। वह क्या किसी से भी छल करेंगी। उनसे प्रेमानन्द ठाकुर से भेंट न हुई तो उन्हीं ने माता ठाकुरानी का नाम किससे सुन लिया। उस देव कन्या ने कहा है कि परमा साध्वी सुनीति देवी के गर्भ से प्रेमानन्द जन्मे हैं। उन्हें क्या कोई मार सक्ता है?

सत्यवती। देव कन्या ने और क्या क्या कहा है?

जगा। जी मैं जब उनकी कुटी के निकट गया, तब वह शिव पूजा करती थीं। वह दोनों चक्षु मूंद कर पूजा करती थीं। मुझे देख भी न सकीं। पूजा समाप्त होने पर गले में वस्त्र धर कर शिव के निकट प्रणाम कर के कहा "भगवन देवादि देव महादेव प्रेमानन्द को आशीर्वाद दो, उनको निर्विघ्न रक्खो।" मैंने तब उनके पांव पर गिर कर कहा "मा! आप किस प्रेमानन्द की मंगल कामना करती हैं? हमारे एक प्रेमानन्द थे। दस बारह वर्ष हुए उनकी मृत्यु हुई है।" तब उन्हीं ने हंस कर कहा "प्रेमानन्द ने परमा साध्वी सुनीति देवी के गर्भ से जन्म लिया है। देवी सिंह की क्या सामर्थ्य है कि उनका बध करें। बहू मैं इस समय निश्चय

कह सक्ता हूं कि रूपा दादा भी नहीं मारे जायेंगे। प्रेमानन्द की मा ने जब उनका पालन किया है, तो कोई उनका प्राण बध नहीं कर सकेगा। रूपा दो एक दिन में यहां आवेगा। कल दिन को मुझे किञ्चित नींद आई, मैंने स्वप्न में देखा है कि रूपा आया है।

जगा की वार्त्ता शेष होने पर सत्यवती ने रामानन्द से कहा—"जगा के स्वप्न की वार्त्ता सुन कर मुझे भी एक स्वप्न का स्मरण हुआ। जिस दिन आप के जामाता और पुत्र को देबी सिंह के आदमी पकड़ कर ले गये, उसी रात्रि को मैं शयन प्रकोष्ट में बैठ कर रोती थी। रोते रोते मुझे किञ्चित निद्रा आ गई तब स्वप्न में देखा था, कि शुभ्र बसन पहिरे एक परमा सुन्दरी रमणी मेरे निकट आई। मैं उसे चीन्ह नहीं सकी थी। उसके उसी सुविमल प्रशान्त मुख की ओर देखती रही। उसके मुख की ज्योति से मेरा शयनागार अत्यन्त प्रकाशमान हुआ। स्त्री ने धीरे धीरे मेरा सम्बोधन कर कहा "पुत्री, मुझे नहीं चीन्ह सकी मैं तुम्हारी सास हूं" इस वार्त्ता के सुनते ही मैंने उनके चरण

में प्रणाम किया। उन्हीं ने स्नेह से मुझे गोद में उठा लिया। बारम्बार मेरा मुख चुम्बन कर के कहा "पुत्री! बिपद में पड़ कर कभी ईश्वर को नहीं भूलना। बिपद भञ्जन हरि सर्वदा तुम्हारे संग रहं कर सब प्रकार के बिपद से तुम्हारी रक्षा करेंगे। पति के निमित्त तुम क्यों इतनी आकुल होती हो। फिर द्वादश वर्ष के पश्चात उनसे तुम्हारा सम्मिलन होगा।"

उनसे कुछ पूछने के पूर्व ही उन्होंने किंचित हास्य कर के फिर कहा "धन्य वही जननी है जो प्रेमानन्द से सुपुत्र को गर्भ में धारण करे—धन्य वह रमणी है जो प्रेमानन्द को भांति पुत्र लाभ करे।"

फिर रमणी अन्तर्द्धान हो गई। मेरी भी निद्रा भंग हुई। प्रातः काल मृत देह खोज कर जब आपने गृह में लौट कर के कहा कि उनका मृत देह नहीं पाया गया तब मैंने सोचा कि हो न हो उन्हीं ने भाग कर आत्म रक्षा की है।

सत्यवती के कह चुकने पर रामानन्द गोस्वामी ने कहा "जगा अब मुझे उसी देव कन्या की कुटी के निकट ले चलो। वह कुटी कितनी दूर है? क्या मैं चल न सकूंगा?

जगा इनको संग लेकर पूर्वोक्त रमणी की कुटी को चला। कुटी रमणी ने स्नेह से इन लोगों का सादर स्वागत किया। सत्यव्रती और रामानन्द रमणी को देखते ही मन ही मन सोचने लगे—यह देवता हैं या मनुष्य।

चतुर्दश अध्याय।

कुटी निवासिनी।

कुटी निवासिनी रमणी सत्यवती और रामानन्द गोस्वामी को सम्बोधन कर कहने लगी—

"मेरा परिचय आप क्रम से सुन सकोगे। इस दुर्दशा में पड़ने के पश्चात इस संसार में प्रेमानन्द और लक्ष्मण के सिवाय दूसरे से अब तक अपना परिचय नहीं कहा। और इस सम्पूर्ण दुःख की वार्ताओं का कहना आरंभ करने से मेरा हृदय-स्थित शोकानल प्रज्वलित हो उठता है, सुतरां आपको मेरा परिचय सुनने का कोई प्रयोजन नहीं प्रेमानन्द मुझे मा कह कर सम्बोधन करते हैं। मैं भी उनको अपने ही गर्भ का सन्तान समझती हूं, इसी कारण केवल उनसे अपना ब्योरा वर्णन किया है।

"प्रेमानन्द ने जैसे देबी सिंह के कारागार से भाग कर अपनी रक्षा किया था उसी को कहती हूं—

रमणी के यहां तक कहते ही रामानन्द कह उठे "अब मेरा पुत्र कहां है? इस जंगल में है

क्या ? पहले मैं उसे एक बार देखना चाहता हूं। पश्चात सकल वार्त्तायें सुनूंगा।

रमणी ने कहा—" अब उनको कलकत्ता के जेल में बांध कर रक्खा है। गंगागोबिंद सिंह ने बुरी चेष्टा करके पूरे पन्द्रह मनुष्यों को जेल में रक्खा है। उन्हीं पन्द्रह मनुष्यों में से एक प्रेमानन्द भी हैं। किन्तु उनके उद्धार के निमित्त रंगपुर के मनुष्य चेष्टा करते हैं। माघ को ७ मी के पूर्व उनके यहां आने का समाचार था। आज माघ को ८मी है। किस लिये उनके यहां आने में बिलम्ब होता है यह नहीं जाना जाता।"

रामानन्द ने रमणी की वार्त्ता में बाधा देकर और प्रश्न किया " उसके आने के निमित्त माघ की ७ मी एक निर्दिष्ट दिन क्यों निश्चय किया गया था ? "

" माघ की ७ मी प्रेमानन्द का जन्म दिन है रंगपुर के सर्व साधारण की सम्मति से ऐसा स्थिर हुआ था, कि उसी शुभ दिन को रंगपुर और दिनाजपुर के अत्याचार निपीड़ित मनुष्य अत्याचार के निवारण करने के लिये संग्राम करने को तैयार होवेंगे। किन्तु जब कि वह अभी तक यहां नहीं

आ पहुंचे, तब तो निश्चय होता है कि उनको संपूर्ण चेष्टा और उद्यम निष्फल हुआ है। आज मैं उनके लिये अत्यन्त उत्कंठित हो कर उनके मंगल की कामना से शिव पूजा करती थी।"

रामानन्द। प्रेमानन्द ने देबी सिंह के हस्त से किस प्रकार आत्म रक्षा किया था ?

रमणी फिर कहने लगी—

"विश्वास होता है आप ने सुना होगा कि देवी सिंह सर्वदा ही अपने संग दस बारह स्त्रियों को संग्रह कर रखता है। साहब सुबेदारों के मन प्रसन्न करने के निमित्त वह इन सम्पूर्ण स्त्रियों को समय समय पर दुर्म्मति परायण अंगरेजों के निकट प्रेरण करता है। मैं भी दुर्भाग्य वश देबी सिंह द्वारा पकड़ी जाकर उन्हीं स्त्रियों में डाली गई थी। अन्तर्यामी भगवान के सिवाय और कोई भी नहीं जानता है कि इस पापात्मा ने मुझे कितनी यन्त्रणा, कितना कष्ट प्रदान किया है।

"जब स्वामी और पुत्र के शोक से मैं विक्षिप्त सी होकर कभी कभी खुले मार्ग में बिचरण करती थी, तब मुझे पकड़ कर ले गया। किन्तु उस

चिप्तावस्था में भी मैं धर्म्माधर्म्म ज्ञान से शून्य नहीं हुई। मैं किसो प्रकार से भी धर्म्म बिसर्जन करने में सम्मत नहीं हुई। उसी समय अपनो दुर्दशा ओर बिपद चिन्ता मेरे प्रवल सन्ताप शोक को क्रमशः हीन करने लगी। दो चार ही दिन के पीछे मैं सब हाल जान गई। तब देबी सिंह के भय से सदैव ही पहने हुए बस्त्र के नीचे एक तीक्ष्ण छूरी लुका रखती थी। नराधम ने एक बार मुझे धूर्तता कर एक अंगरेज़ के निकट प्रेरण किया था। मैं पहिले उसको धूर्तता जानती तो कभी न जाती। मुझे अपने घर भेजने का छल करके उस म्लेच्छ के घर भेजा। दुरात्मा अंगरेज़ हाथ बढ़ा कर मुझ को धरने में उद्यत हुआ, मैंने तुरंत छूरी को बाहर कर उसके बक्षस्थल में प्रहार किया। उसका सर्वांग बस्त्र से आवृत था, इससे छूरी उसके बक्षस्थल में प्रवेश नहीं को थो। किन्तु उस नराधम ने मुझे फिर स्पर्श नहीं किया। वह देबी सिंह पर अत्यन्त क्रोधित हुआ। देबीं सिंह उसी समय से मुझे और किसी के निकट प्रेरण नहीं करता था। किन्तु उसे आशा थी कि दो चार मास के पश्चात मुझे

वशीभूत कर सकेगा। इसके पश्चात दस बारह स्त्रियों के संग मुझे भी लेकर मुर्शिदाबाद से पुरनियां को चला। मैं किसी प्रकार से भी पुरनियां जाने के लिये संहमत नहीं हुई। तब मुझे बांध कर पुरनियां ले गया। जो सम्पूर्ण स्त्रियां प्राण का भय करें, प्राण परित्याग कर धर्म्म रक्षा करने में तत्पर न हों, केवल उनको ही दुरात्मा गण अनायास ही कुपथ गामिनी करने में समर्थ होते हैं। किन्तु धर्म्म रक्षा करने के लिये जो प्राण त्याग करने में सर्वदा ही प्रस्तुत रहती हैं, इस भूमण्डल में कोई भी उनका धर्म्म नष्ट नहीं कर सक्ता। मैं प्रायः डेढ़ वर्ष तक देवी सिंह की उन्हीं स्त्रियों के साथ रही पुरनिया में मेरे सिवाय और भी दस स्त्रियां उसके संग थीं। उनमें से छः मुसल्मान और चार हिन्दू थीं। उन सरल प्रकृति मुसल्मान कुमारियों का उच्च पदस्थ साहब सूबों के साथ निकाह कर देने की आशा देकर लुभाया करता। किन्तु हिन्दू महिला गण भली भांति जानती थीं, कि अंगरेज़ों को स्पर्श करने से उनको जाति भ्रष्ट होना होगा, सुतरां केवल प्रहार के भय से वह अनुपाय ही कर

आत्म बिक्रय करने में सम्मत होतीं।

पुरनियां में देवी सिंह के अधीन एक सिक्ख जमादार थे। उनका नाम लच्मण सिंह था। लच्मण सिंह ने जब देखा, कि धर्म्म रचा के निमित्त मैं प्राण बिसर्जन करने में भी कुन्ठित नहीं हूं, तब मेरे प्रति उनके प्रगाढ़ भक्ति और श्रद्धा का उदय हुआ। वह मुझे मा कह कर सम्बोधन करने लगे। एक दिन तीसरे प्रहर को लच्मण सिंह ने मेरे निकट आकर कहा, कि विश्वासघातकता को मैं अत्यन्त पाप समझता हूं नहीं तो इतने दिनों में मैं गुप्त भाव से तुम्हारे भागने का सुयोग कर देता, मैंने लच्मण से कहा बेटा स्वामी और पुत्र के शोक से मेरा हृदय दग्ध होता है। मेरी मृत्यु होना ही भला है। तुम ब्यर्थ मेरे लिये क्यों बिपद में पड़ोगे? जिस से मैं शीघ्र ही इस लोक को त्याग सकूं, उसी की चेष्टा करती हूं। बिश्वास होता है दो एक मास और यहां रहने से परमेश्वर मुझे इस संसार की यन्त्रणा से उद्धार करेगा।

"लच्मण इस वार्ता को श्रवण कर बालक की भांत रोदन करने लगा। वह एक दीर्घाकार

वीर पुरुष है। उसे देख कर यम का सहोदर कहना उचित बोध होता है। किन्तु इस प्रकार बलवान सैनिक पुरुष का हृदय इतना कोमल है यह मैं कभी नहीं जानती थी। उन्हों ने रोते रोते कहा" मा! मैं निश्चय ही तुमको अपनी गर्भ धारिणी की भांति समझता हूं। तुम्हारा धर्म भाव, पवित्रता का भाव देख कर मैं मोहित हुआ हूं। दुरात्मा देवी सिंह ने यहां सैंकड़ो स्त्रियों को ला कर उनको सहजही कुपथ गामिनी किया है। किन्तु तुम्हारी भांति परमा-साध्वी मैंने और कहीं नहीं देखा। बाबा नानक ने कहा है, कि साध्वी रमणी गण जहां बास करती हैं, वही तीर्थ स्थान है। मैंने सोचा है आप को गृह में रख कर स्त्री समेत तुम्हारी दिन दिन जननी की भांति पूजन करूंगा। आप मुझको अपनी गर्भ जात सन्तान सोचेंगी तो मैं अपने को कृतार्थ समझूंगा तुम्हारे, मेरे गृह में रहने से ही मेरा गृह एक पवित्र तीर्थ स्थान होगा।"

"लक्ष्मण की इस वार्ता को श्रवण कर तुरन्तही मेरे हृदय में सन्तति स्नेह का उदय हुआ। वह जैसा दीर्घाकार पुरुष है, उससे उसको देखने से ही

रमणी मात्र को भय का संचार होता है। किन्तु हृदयावेग द्वारा प्रचलित हो कर मैं उसके पीठ पर हाथ फेरने लगी थी। पालित सिंह की भांति वह मेरे पद तल में पड़ा रहा।"

"किन्तु कुछ काल लक्ष्मण मन ही मन किंचित् चिन्ता कर फिर मुझ से कहने लगा" मा! मेरे कोई सन्तान नहीं है। एक भ्रातृ पुत्र था उसकी भी मृत्यु हो गई है। मैं अब चाकरी न करूंगा विशेषतः देवी सिंह की भांति दुरात्माओं की, किंवा इस ईस्ट इंडिया कम्पनी की भांति धर्माधर्म ज्ञान शून्य म्लेच्छों की चाकरी करने से निश्चयही लोगों को दया धर्म परित्याग करना पड़ता है। मैं चाकरी परित्याग कर तुमको लेकर स्वदेश को चला जाऊंगा यदि देवी सिंह को तुमको छोड़ देने में सम्मति न होगी, तो तुरंत (कटि देश की तरवार दिखा कर) इसी सुतीक्ष्ण तरवार से उसका मस्तक छेदन कर तुम्हारा उद्धार करूंगा।" किन्तु जितने दिन उसके अधीन में चाकरी करूंगा। उतने दिन उसके विरुद्ध कोई विश्वासघातकता न करूंगा। निमक-हरामी अत्यन्त गुरुतर पाप है। बाबा नानक

कह गये हैं, कि जिसका वेतन ग्रहण करोगे, प्राण बिसर्जन करके भी उसका उपकार करना पड़ेगा।

"लक्ष्मण के मुख से इन संपूर्ण वार्ताओं का कह कर प्रस्थान करने पर मैं एकान्त में बैठ कर उनकी संपूर्ण बार्ताओं की चिन्ता करने लगी। क्रमशः मुझे आत्म बिस्मृत हो गया। देखते ही देखते मुझे किंचित् निद्रा का आवेश हुआ। उसी समय में अचानक मेरे पीछे चित्कार का शब्द सुनाई पड़ा। उस समय रात्रि प्रायः दो दंड व्यतीत हुई है। चांदनी के कारण देख पड़ा कि एक वृक्ष के तले एक परम सुंदर युवा पुरुष को बध करने के निमित्त देवी सिंह के कई एक बरकन्दाज़ तैयारी करते हैं। गुप्त भाव से देवी सिंह जिनका प्राण बिनाश करता, उनको भीतर उसी वृक्षतल में लाकर ही बध करता था। युवक ने बिशेष वीरत्व प्रकाश कर एक बरकन्दाज़ के हस्त से तरवार छीन लिया, और उसका मस्तक छेदन किया उसी से बोध होती है कि बरकन्दाज़ों में से किसी ने चित्कार किया होगा।"

" इस युवक के मुख श्री को देख कर इस पर मेरी दया का संचार हुआ। मैं मनहीं मन सोचने लगी, ऐसे सुपुत्र के शोक से इस की जननी निश्चय ही पागल होगी। किस भांति से इस युवक की प्राण रक्षा हो सक्ती है उसके ही उपाय की चिन्ता करने लगी। जितना ही मैं उसके मुख की ओर देखती, उतना हो धीरे धीरे उस पर मेरे स्नेह की वृद्धि होने लगी। अनेक भविष्यत चिन्ता कर मैंने लक्ष्मण के निकट दौड़ कर कहा " पुत्र! लक्ष्मण. देवी सिंह के आदमी एक परम सुंदर ब्राह्मण कुमार को बध करने का उद्योग करते हैं। यदि तुम मेरे यथार्थ ही पुत्र हो, तो मेरे अनुरोध से इसके प्राण की रक्षा करो।"

लक्ष्मण ने कहा " यह अत्यन्त दुःसाध्य व्यापार है। इस ब्राह्मण कुमार का नाम प्र मानन्द गोस्वामी है। देवी सिंह का प्राण बध करने के अभिप्राय से इस युवक ने एक छूरी अपने संग लाया था। देवी सिंह जैसा मनुष्य है उससे क्या वह इसको कभी क्षमा करेगा?"

"मैंने कहा मेरे अनुरोध से तुम कार्यवश बिश्वास

घातकता कर इसके प्राण की रक्षा करो। तब लक्ष्मण अनेक भविष्यत चिन्ताओं में मेरे संग ही संग इस बध स्थान में आया। एवं बरकन्दाज़ों को धमका कर कहा इसको इस समय बध करने की आज्ञा नहीं है। रात्रि को दस बजे पर जैसा कुछ हो करना होगा। इसको मेरे ज़िम्मे कर तुम लोग चले जाओ। बरकन्दाज़ों ने कहा "जमादार साहब यह साला बड़ा बज़्ज़ात है। अकेले इसे पकड़कर न रख सकोगे।"

लक्ष्मण ने कहा "कुछ भय नहीं। ऐसे सात बंगालियों को भी मैं अकेला पकड़कर रख सक्ता हूं।"

"बरकन्दाज़ों ने सोचा, कदाचित देवी सिंह ने पीछे से लक्ष्मण को ऐसी ही आज्ञा दी हो तब उन्हों ने प्रेमानन्द को लक्ष्मण के ज़िम्मे कर दिया और चले गये।

देवी सिंह स्वयं भी लक्ष्मण का अत्यन्त बिश्वास करता था। लक्ष्मण जिस भांति उसकी सकल कुक्रियाओं का सर्वान्तःकरण से घृणा करता था, उसे देवी सिंह भली भांति जानता था। किन्तु वह जान सुन कर भी लक्ष्मण को बरख़ास्त करने

का इच्छुक नहीं था। देबी सिंह को दृढ़ बिश्वास था कि लक्ष्मण सिंह कभी मिथ्या प्रबञ्चना कर मेरा अर्थ नाश नहीं करेगा। इस लिये देबी सिंह ने लक्ष्मण को खज़ाने के पहरे पर नियुक्त किया था। लक्ष्मण, देबी सिंह के कोष का जमादार था।

"रात्रि के नौ बजे के समय आकाश मण्डल से चन्द्रमा अदृश्य हुआ। चहुं ओर फिर घोर अन्धकार से आवृत हो गया। तब लक्ष्मण ने गुप्त रीति से मुझे अपने गृह में बुलाकर सिपाहियों की पोशाक पहिरने को कहा। मैं और प्रेमानन्द दोनोंही सिपाहियों की पोशाक पहिन कर लक्ष्मण के संग ही संग देबी सिंह की माल कचहरी के बाहर हो। कुछ दूर चल कर एक प्रान्त में आ उपस्थित हुए। वहां और दो मनुष्य हमारे निमित्त अपेक्षा करते थे। लक्ष्मण ने उनसे कहा "इस ब्राह्मण कन्या को मैं माता के समान सम्मान करता हूं। ये परम साध्वी हैं। इनको और इस युवक को दिनाजपुर में मेरे भ्राता राम सिंह के घर पहुंचा दो। और यह पत्र राम सिंह को देना।"

"हम लोगों के लक्ष्मण के निकट से बिदा होने के पूर्व उस ने मुझ से कहा था! मैं गुरु नानक का शिष्य हूं। इस जन्म में कभी विश्वासघातकता नहीं किया, किन्तु देवी सिंह कभी इस ब्राह्मण कुमार को नहीं छोड़ता लाचार होकर आज मुझे विश्वासघातकता करना पड़ा, अतएव मैं अभी देवी सिंह के निकट जाकर कहूंगा, कि मातृ वाक्य पालने के लिये में ने विश्वासघातकता किया है। मैं अब उस की चाकरी नहीं करूंगा, उस की इच्छा होवे तो विश्वासघातकता के निमित्त मुझे यथा योग्य दण्ड दे सक्ता है, मैं शिर झुका कर उस का प्रदत्त दण्ड ग्रहण करूंगा।

"मैं लक्ष्मण की यह बात सुन कर चौंक उठी। मैंने यह सोच कर, कि देवी सिंह चाहे लक्ष्मण के प्राण विनाश की आज्ञा देगा और लक्ष्मण इच्छा पूर्वक विश्वासघातकता के दंड के निमित्त अपने प्राण विस्सर्ज्जन करने में सम्मत होगा, लक्ष्मण के हाथ को धर कर कहा। बेटा! पुत्र के शोक से मेरा हृदय दग्ध होता है तिस पर भी इस विपत्ति के समय में भी तुम मुझे मा कहा करते हो, उस से मुझे

किञ्चित् शांति लाभ होती है अब क्या मैं तुम्हारा जीवन विसर्जन कराकर आत्म रक्षा करूंगी? मैं फिर तुम्हारे संग ही मग जाऊंगी। केवल इस ब्राह्मण कुमार को भागने का सुभीता कर दो।

लक्ष्मण मेरी बात सुन कर कुछ काल तक चुप हो रहा, पश्चात् बोला "मा! तुम्हें भय नहीं, मैं ने प्राण विसर्ज्जन करना ही सोचा था। पर तुम्हारे वाक्य में कभी उल्लंघन नहीं करूंगा मेरे बचने ही से यदि तुम्हें सुख होता है, तो मैं केवल तुम्हारे सुख शांति के हेतु जीवन धारण करूंगा। आज से इस जीवन को तुम्हारे चरणों में समर्पण करता हूं तुम्हारी सेवा सुश्रूषा करना ही मेरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य है। जिस से तुम सुखी होगी वैसा ही करूंगा। आज से तुम मेरी एक मात्र जननी, एक मात्र सेवा योग्य देवी हुई। देवी सिंह के कोष की कुंजी अब तक मेरे निकट है मैं अभी जाकर चाकरी परित्याग करूंगा, उस के कोष की कुंजी उसे लौटा दूंगा, और उस से कह आऊंगा कि जब ब्रह्महत्या करने से भी वह कुंठित नहीं है, तब मैं उस के अधीन में चाकरी न करूंगा।"

"लक्ष्मण यही कह कर हमसे बिदा होकर गया। हम उसके नियुक्त दो मनुष्यों के संग क्रमशः कृष्णगंज से होते हुए दो दिन के पीछे दिनाजपुर आ पहुंचे।"

"लक्ष्मण का पत्र पाकर उसके भ्राता राम सिंह ने अत्यन्त आदर से हम लोगों को अपने गृह में स्थान प्रदान किया। राम सिंह का हृदय दया और स्नेह से परिपूर्ण है। लक्ष्मण मुझे मा कहा करता था, उसी भांति राम सिंह भी मुझे मा कह कर सम्बोधन करने लगा। किन्तु राम सिंह उस समय अत्यंन्त शोकार्त हो गया था। हम लोगों के उसके घर पहुंचने के कई एक मास पूर्व ही उसके एकलौते पुत्र की मृत्यु हुई थी। प्रेमानन्द को राम सिंह ने अपने गृह में पाकर अभेदरहित सन्तान की भांति उन पर स्नेह करने लगा।

प्रेमानन्द राम सिंह की स्त्री को और मुझे मा कह कर सम्बोधन करने लगा। इसके दो दिन के पश्चात् लक्ष्मण सिंह चाकरी परित्याग कर दिनाजपुर में आया लक्ष्मण की स्त्री भी राम सिंह के गृह में

निवास करती थी। वह पुत्र बधू की भांति मेरी सेवा सुश्रूषा करने लगी। किन्तु मुझे सर्वदा अश्रु पात करते देख कर, लछमण और उसकी स्त्री अत्यन्त दुःख प्रकाश करते, और मेरे दुःख निवारण का कोई उपाय है या नहीं, इसी की सर्वदा जिज्ञासा करते अंत को मैंने उनसे अपना दुःख प्रकाश किया।

*   *   *   *   *   *

"तब प्रेमानन्द और लछमण सिंह ने मुझको राम सिंह के घर रख कर, मेरे ज्येष्ट पुत्र की खोज के लिये दिल्ली की ओर यात्रा किया। दो तीन मास हुए प्रेमानन्द स्वदेश में लौट आये हैं। किन्तु लछमण अब तक पञ्जाब में मेरे पुत्र का अनुसन्धान करते हैं। प्रेमानन्द ने जैसा कहा है, उससे बोध होता है लछमण शीघ्र ही मेरे ज्येष्ट पुत्र को सङ्ग लेकर यहां आ पहुंचेंगे। सुना है मेरा ज्येष्ट पुत्र अभी तक जीवित हैं।

रमणी के यह कहते ही सत्यवती ने उससे प्रश्न किया "आप के कितने पुत्र थे।"

रमणी ने कहा "वह सब बात और किसी से कहने की इच्छा नहीं होती। इतनाही कहती हूं

कि दुरात्मा गङ्गागोविन्द सिंह के छल से मेरे स्वामी ने आत्म हत्या किया और अनाहार से मेरे दो शिशुसंतान की मृत्यु हुई।

रामानन्द गोस्वामी ने कहा "पुत्री आपके प्रसाद से ही मेरा प्रेमानन्द अभी तक जीवित है। आप अपना परिचय प्रदान करेंगी तो क्या हम आपके कोई अनिष्ट की चेष्टा करेंगे ?

रमणी। आप मेरे कोई अनिष्ट की चेष्टा नहीं करेंगे, मैं उसे भली भांति समझ सकती हूं। किन्तु प्रेमानन्द ने मुझे अभी किसी से भी अपना वृत्तांत कहना निषेध किया है। मैं नहीं समझ सक्ती कि किस लिये अब तक गंगा गोबिंद सिंह मुझे पकड़ने के निमित्त चेष्टा करते हैं। बोध होता है वह इस विषय में कुछ जानते हैं इसीसे मुझे सर्वदा अपने को छिपा रखने को कहा है।

रामानन्द। प्रेमानन्द को अब गंगागोबिंद सिंह ने किस लिये कारागार में बद्ध कर रक्खा है। अपनी सम्पूर्ण धर्मार्थ जमीन को मैंने दस वर्षों से छोड़ दिया है। पैतृक भद्रासन पर्य्यन्त परित्याग किया है।

रमणी। किस लिये प्रेमानन्द को कारारुद्ध कर रक्खा है यह मैं किञ्चित् भी नहीं जानती। सुना है कि गौर मोहन चौधरी नामक एक दुष्ट ज़मींदार ने उनको सम्पूर्ण चेष्टा प्रगट कर दी है।

रामानन्द। देवी सिंह के पुरनिया के कारागार से भागने पर प्रेमानन्द कितने दिनों तक दिनाज-पुर में रहे थे?

रमणी। पुरनिया से भाग कर दिनाजपुर पहुंचते ही मैंने प्रेमानन्द को अपने पिता और स्त्री के निकट जाने के लिये कहा था। किन्तु वह मेरी वार्ता पर सम्मत नहीं हुए। उन्हीं ने मुझ से कहा "मा! तुम्हारे ही प्रसाद से मेरी जीवन रक्षा हुई है। तुम्हारे पुत्र का अनुसन्धान किये बिना मैं घर को न जाऊंगा"। विशेषतः उसी समय वह गुप्त रीति से अनुसन्धान कर जान सके कि आप लोग निर्विघ्न रङ्गपुर में किसी एक शिष्य के गृह में निवास करते हैं, आप लोगों को तब अन्य कोई विपदाशङ्का नहीं थी, इसी से वह लक्ष्मण के सङ्ग मेरे ज्येष्ट पुत्र के अनुसन्धान के लिये चले गये। किन्तु ग्यारह वर्ष पर्यन्त काशी

श्री बृन्दावन, प्रयाग, अयोध्या प्रभृति नाना देश पर्य्यटन करने पर भी मेरे पुत्र का कोई पता नहीं लगा। ये लोग तब निरास होकर स्वदेश को चले आते थे। काशी पर्य्यन्त फिर आकर इन्हों ने एक महा पुरुष से सुना, कि मेरा पुत्र पञ्जाब में है। तब लक्ष्मण ने पुनर्वार काशी से पञ्जाब की यात्रा किया, प्रेमानन्द अपने बृद्ध पिता से भेंट करने के निमित्त स्वदेश को आये। किन्तु रङ्गपुर में जिस शिष्य के घर आप अपनी पुत्र वधू सहित निवास करते थे उस घर का चिन्ह भी नहीं देख सके। रङ्गपुर से आप तब कहां गये उन्हें कोई भी नहीं कह सका। तब वह अत्यन्त दुःखित हो फिर दिनाजपुर में मेरे निकट आये। यहां आकर सुना कि गङ्गागोविंद सिंह और देवीसिंह ने मुझे पकड़ने के निमित्त गुप्त चर नियुक्त किये हैं। इस से हम लोग अत्यन्त भीत हुए। तब प्रेमानन्द राम सिंह से परामर्श कर मुझे लेकर इसी जंगल में आकर बास करने लगे। मैं इन दो मास से यहां ही रहती हूं! किन्तु प्रेमानन्द मध्य मध्य में आप के अनुसन्धान के निमित्त रङ्गपुर जाते थे। उसी रङ्गपुर

से उनको देवीसिंह के आदमियों ने पकड़कर गङ्गागोबिंद सिंह के निकट प्रेरण किया है। गङ्गागोबिन्द सिंह ने उन को कारागार में बद्ध कर रक्खा है।

रामानन्द। यह किससे सुना है। कि रङ्गपुर में देवी सिंह के आदमियों ने उन को पकड़ा है।

रमणी। प्रेमानन्द के परामर्श से रङ्गपुर की संपूर्ण अत्याचार निपीड़ित प्रजा सम्प्रति दल बद्ध हुई है। देवी सिंह के आदमियों ने उन के ऊपर घोर अत्याचार किया है इसी से अब उन लोगों ने एक बार ही दृढ़ प्रतिज्ञा की है कि कम्पनी की अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे कम्पनी को इस देश से एक बार ही निकाल देवेंगे। प्रेमानन्द के दैल वाले सब मनुष्य सर्वदा ही मेरे यहां आकर मेरा समाचार ले जाते हैं। वही लोग मेरे आहार के लिये चावल इत्यादि दे जाते हैं। प्रेमानन्द कलकत्ता प्रेरित होने के पूर्व्व ही उन लोगों को मेरी खबर लेते रहने को कह गये हैं। किन्तु आज मुझे बड़ी आशङ्का होती है बोध होता है प्रेमानन्द की सकल चेष्टा, सकल उद्यम विफल होंगे। ७ मी माघ के

पूर्व्व प्रेमानन्द ने सम्पूर्ण बन्दोबस्त अवधारित किया था किन्तु आज भी वह न आ सके, इस से अत्यन्त ही विपद की आशंका होती है।

रमणी की वार्त्ता शेष होते न होते जङ्गल में से हठात् पांच मनुष्य कुटी के सन्मुख आ उपस्थित हुए। रामानन्द गोस्वामी एवं सत्यवती भय से चौंक उठे किन्तु रमणी ने उन को आश्वस्त करके कहा, "भय नहीं। ये लोग प्रेमानन्द के अनुगत मनुष्य हैं, प्रेमानन्द को क्या हुआ है अभी ज्ञात हो जायगा।"

—*—

पञ्चदश अध्याय।

कलकत्ता यात्रा।

नवागत पांचों मनुष्यों ने कुटी के द्वार पर आकर कुटी निवासिनी रमणी के चरणों में भक्ति भाव से प्रणाम किया। रमणी ने उन को आशीर्बाद देकर कहा। "भगवान्न तुम्हारी मनावांछा पूर्ण करें।" इन पांचो मनुष्यों में से एक का नाम दयाराम है। इस को कोई २ दयाशील कहा करते हैं। अपर चारों मनुष्य इस रमणी की आहार वस्तु मस्तक पर धर कर दया राम के संग आये हैं।

दयाराम कुटी निवासिनी को सम्बोधन करके कहने लगा—"मा! हम अब विशेष उत्कंठित हुए हैं प्रेमानन्द ठाकुर पकड़ा कर जाने के समय कह गये हैं, वह जिस भांति हो सकेगा, जेल भंग कर, माघ की सप्तमी के पूर्व रंगपुर आ पहुंचेंगे। किन्तु आज पर्यन्त भी वह न आ सके। वह और भी कह गये थे यदि माघ की सप्तमी के पूर्व ना आ सकें, तो उसी दिवस हम को कार्यारंभ करना होगा।

उन्ही के उपदेशानुसार हम लोगों ने विगत कल नूरुल मुहम्मद को नवाब के पद में बरण कर कम्पनी के प्यादा और बरकन्दाजों को ग्राम से निकाल बाहर करदिया था। किन्तु उन लोगों ने उसी विश्वासघातक गौर मोहन चौधरी की सहायता ग्रहण कर काज़ी हाट के मनुष्यों को पकड़ना आरम्भ किया। इसी बहाने कल हम लोगों से उन का एक युद्ध हो गया है। युद्ध में उन की संपूर्ण रूप से हार हुई है। ईस्ट इंडिया कम्पनी के सिपाही, बरकन्दाज, प्यादा कोई एक को भी प्राण बचा कर भागने की सामर्थ नहीं रही किन्तु प्रेमानन्द कह गये थे, कि भागने पर मनुष्यों का कभी प्राण बध न करना। हम लोगों के पक्ष के मनुष्यों ने प्रेमानन्द के उस उपदेश को भूल कर सामयिक उत्तेजना बश कम्पनी के संपूर्ण मनुष्यों का प्राण विनाश किया है; और गौर मोहन चौधरी की भी उन के संग हत्या की है। गौर मोहनके विश्वास घातकता ही से प्रेमानन्द ठाकुर पकड़े गए हैं। इसी हेतु केवल बैर भाव से अधीर होकर हमारे मनुष्यों ने गोर मोहन का प्राण बध किया है हमें बोध होता है प्रेमानन्द ठाकुर के संग्राम क्षेत्र में

उपस्थित न रहने से, उन के निरधारित नियम संपूर्ण कार्यों में परिणत करना अत्यन्त कठिन हो जायगा। वह बारम्बार कह गये हैं, कि धर्म का पथ,—सत्य का पथ परित्याग न करने से कभी हम पराजित न होंगे। उन का उपदेश प्रतिपालनार्थ हम प्राणपण से चेष्टा करते हैं। किन्तु विपक्ष गण जैसे विश्वासघातक हैं, उस से हम को भय होता है कि आत्म रक्षार्थ हम को भी कभी २ न्याय पथ परित्याग करके अन्याय युद्ध में प्रवृत्त होना होगा। इस समय हमारा ओर कोई उपदेष्टा नहीं है हम आप से भेंट करना देवी भगवती के समान समझते हैं। प्रेमानन्द के उद्धार के निमित्त अब क्या करना होगा यही आप से पूछने आये हैं।"

दया राम के वाक्यानुसार पर कुटी निवासिनी ने कहा "पुत्र! जब संग्राम आरम्भ हुआ है, तब तुम लोगों में से किसी को भी अब कार्य्य क्षेत्र परित्याग कर प्रेमानन्द के उद्धारार्थ अन्य स्थान में जाना उचित नहीं। तुम कार्य्य क्षेत्र में रह कर प्राण पण से युद्ध करो। प्रेमानन्द के उद्धारार्थ जो कुछ करना है, उस में स्वयं ही करूंगी। कम्पनी

की दुष्टता से देश में अराजकता पूर्ण हो रही है, उसी से फिर इस युद्ध के प्रसंग में नाना प्रकार के अत्याचार होने की सम्भावना है। विपक्ष दल देशीय रमणियों के साथ किसी प्रकार का अत्याचार न कर सकें, उसी के लिये प्राण पण से चेष्टा करना। प्रेमानन्द तुम से बारम्बार कह गये हैं, कि युद्ध काल में क्या स्वपक्ष क्या विपक्ष किसी पक्ष की स्त्रियों पर किसी प्रकार का अत्याचार न हो, इसी विषय में सावधान रहियेगा। तुम उनके इस उपदेश को कभी लंघन न करना।"

दयाराम। हम प्राणान्त पर भी उनके इस उपदेश का अनादर न करेंगे। किन्तु कम्पनी के सिपाही गण स्त्रियों पर भी अत्याचार करने में कुन्ठित नहीं होते, इससे उनके ऐसे निष्ठुर आचरण देख कर हमारे मनुष्य भी कोपाविष्ट होकर उनका अनुसरण कर सक्ते हैं।

कुटी निवासिनी। सैनिक पुरुष गण में से जो कोई नारी जाति पर अत्याचार करता है, वह अत्यन्त ही कायर पुरुष है। वह कभी वीर नाम के योग्य नहीं होता है। वह सत्य सत्य ही अत्याचारी हैं।

दयाराम। आप के इस उपदेश को प्रतिपालन करने के लिये हम प्राणपण से चेष्टा करेंगे। कल युद्ध के पश्चात मैं सायंकाल में रंगपुर को परित्याग कर आज तीसरे प्रहर यहां आ पहुंचा हूं। मुझे क्या अभी रंगपुर लौट जाने को कहती हैं ?

कुटी निवासिनी। तुम अब एक मुहूर्त भी विलम्ब न करके संगी मनुष्यों के सहित शीघ्र अश्वारोहण कर रंगपुर चले जाव। ईश्वर की इच्छा हुई तो प्रेमानन्द चार पांच दिन में यहां आ पहुंचेंगे।

दयाराम तुरंत रमणी को प्रणाम कर रंगपुर की ओर चला। उसके चले जाने पर कुटी निवासिनी देवी ने सत्यवती से कहा पुत्री ! मैं स्वयं प्रेमानन्द के उद्धारार्थ कलकत्ता जाऊंगी। आप यहीं मेरे लौट आने तक निवास कीजिये। किन्तु मुझे एक विशेष आशंका होती है, प्रेमानन्द ने मुझे इस स्थान को परित्याग कर जाने का बारम्बार निषेध किया है। किस अभिप्राय से उनने ऐसा निषेध किया है, उसे किञ्चित भी नहीं जानती।

सत्यव्रती ने कहा "मा ! आपको उन्हीं ने

स्थानांतर में जाने को निषेध किया है, तो आप यहां ही रहें। मैं कलकत्ता जाकर उनके उद्धार की चेष्टा करूंगी।

कुटो निवासिनो। उनका उद्धार करने के लिये किस उपाय का अवलम्बन करोगी ?

सत्यवती। वहां जाने से अवस्था देख कर जो कुछ अच्छा बोध होगा किया जायगा।

कुटो निवासिनी। तुम कुल बधू हो। तुम्हारे लिये यह व्यापार दुःसाध्य है।

सत्यवती। विपद में पड़कर अनेकानेक दुःसाध्य व्यापार साधन करना सीखा है। विपद और दुरवस्था मनुष्य को अनेक विषयों में शिक्षा प्रदान करता है।

रामानन्द गोस्वामी ने इनके परस्पर की कथा वार्त्ता को श्रवण कर कहा—"पुत्र बधू ने जैसा साहस प्रकाश कर मुझे कारागार से मुक्त किया है, उससे मुझे बोध होता है कि वह निश्चय ही पुत्र को उद्धार कर ला सकेगी। मैं अब अनेक दिन नहीं बचूंगा। मृत्यु के पूर्व्व ही पुत्र को एकबार देखने की इच्छा होती है।

रामानन्द की वार्त्ता शेष होते न होते, रूपा इन

लोगों के निकट आ उपस्थित हुआ। रूपा पूर्व्व ही से जानता था कि ये लोग पंडुआ के जंगल में भाग कर रहेंगे। रूपा को निरापद लौट आते देख कर इन सबों ने अतिशय आनंद लाभ किया। अनेक कथा वार्त्ताओं पर सत्यवती ने जगा को संग लेकर स्वामी के उद्धारार्थ कलकत्ता की ओर यात्रा किया। उसके न रहने के समय में कुटी निवासिनी रमणी रामानंद की सेवा सुश्रूषा करने लगी।

षोड़श अध्याय।

स्वप्न।

Ganga Govind was considered as a general oppressor of every native he had to deal with. By Europeans he was detested, by natives he was dreaded.—Evidence of Mr. Peter Moore in the trial of Hastings.

इस संसार में जो कोई दूसरे का अनिष्ट कर पद प्रभुत्व लाभ करता है, सर्बदा जो कोई स्वार्थ परता द्वारा परिचालित हो कर अन्य के सुख दुःख पर एक बार भी भ्रूक्षेप नहीं करता है, इस जीवन में उसको कभी शांति नहीं है। चिर अशान्ति ही उसकी एक मात्र पुरष्कार है। किन्तु वे सब एक ही प्रकार अशान्ति भोग नहीं करते। अपने२ प्रकृति के अनुसार एक एक मनुष्य एक २ प्रकार की अशान्ति भोग करते हैं।

स्वार्थ परता, अर्थ लोलुपता, काम, क्रोध इत्यादि अन्यान्य रिपुओं ने जिसके हृदय को एक बार ही पाषाण कर दिया है, जिसके हृदय में दया का चिन्ह

मात्र भी परिलक्षित नहीं होता है, दरिद्र के आर्तनाद और क्रन्दन ध्वनि जिसके कर्ण में किसी प्रकार भी प्रवेश नहीं करते हैं; आत्म सुख चिन्ता ने जिसके बिवेक को स्तंभित किया है, एवं यश और प्रभुत्व लाभ की प्रबल अभिलाषा जिसकी चिंता शक्ति को केवल उसी ओर ही परिचालित करती है, निराशा और भय ही उसके चिरअशान्ति का एक मात्र मूल कारण है।

दूसरी ओर जिसका विवेक अभी तक संपूर्ण रूप से स्तंभित नहीं हुआ है, दया स्नेह ममता अभी विद्युत् के प्रकाश की भांति जिसके हृदय में अन्ततः पल भर के लिये भी कभी२ उदय होती है, परमेश्वर उसको सतपथ में लाने के लिये समय २ पर उसके हृदय में पश्चात्ताप की अग्नि प्रज्वलित करके उसको अपने सुधार का सुयोग प्रदान करते हैं।

देवी सिंह का हृदय एक बार ही पाषाण हो गया है, उसकी अन्तरात्मा दग्ध हो कर क्षारखार हुई है; दया, ममता, और स्नेह का प्रकाश उसके अन्ध कूप सदृश हृदय में कभी प्रवेश नहीं कर सकता; कोई कुकार्य्य, किसी प्रकार का बुरा आचरण

उसके हृदय में पश्चाताप की अग्नि को प्रज्वलित नहीं कर सकता है।

परन्तु गंगागोविन्द सिंह देवी सिंह की भांति एक बार ही मनुष्यत्व विहीन नहीं है। स्वार्थपरता और अर्थ लोलुपता ने संपूर्ण रूप से उस की विचार शक्ति को मंद नहीं किया है। एडमन्ड बर्क प्रभृति इङ्गलैन्डीय सुहृदय महात्मा गण ने, देवी सिंह और गंगा गोविन्द सिंह दोनों को समान नरपिशाच की व्याख्या किया है। किन्तु गंगा गोविन्द के हृदय में क्षण स्थायी विद्युत् की भांति, समय २ पर दया स्नेह और ममता का शेष चिन्ह दिखाई देता है।

दिनभर गंगा गोविंद सर्बदा राजस्व संबंधी कार्य्य ही में व्यस्त रहता है। देश के संपूर्ण राजस्व संबंधी कार्य्यों का भार उस के हस्त में है इसी से दिन में अन्य कोई विषय की चिंता करने का एक मुहूर्त भी उस को अवकाश न था, परन्तु प्रत्येक रात्रि को एक भयानक स्वप्न उस की निद्रा भंग करता था। स्वप्नावस्था में वह किसी २ रात्रि को चीत्कार कर उठता था।

प्राय: बारह तेरह वर्षों से प्रत्येक रात्रि को वह स्वप्न देखता था कि—सुतीक्ष्ण छूरी हस्त में लिये एक परमा सुंदरी ब्राह्मण कन्या दोनों कक्ष में दो मृत सन्तान लेकर उसकी ओर दौड़ी आती है। ब्राह्मणी निकट आकर दोनों मृत सन्तान को उसके मस्तक पर पटक कर, उसके हृदय में छूरी मारती है। और पीछे से एक ब्राह्मण अपने गले की रस्सी खोल कर उसी रस्सी से उसके गले को बांधता है; और बारम्बार क्रोध से कहता है "तेरे प्रतारण से मैंने सर्वस्व खो कर उद्बन्धन से (फांसी लगा कर) प्राण त्याग किया था। आज तुझे भी उद्बन्धन से मरना होगा।"

रस्सी गले में बंधते ही कंठावरोध होना वह समझता था; तब स्वप्नावस्था में चीत्कार कर उठता। उसके चीत्कार से कभी कभी उसकी सहधर्मिणी की भी निद्रा भंग होती।

गंगा गोविन्द की सहधर्मिणी अत्यंत पतिप्राणा और पुण्यवती थी। वह स्वामी के मुख से इस स्वप्न की वार्ता श्रवण कर अत्यंत दु:खी होती थी। इस भांति स्वप्न संबन्ध में हिंदू रमणियों के उस समय

प्रचलित संस्कार से चलायमान होकर, उस ने एक दिन कातर कंठ से कहा—

"नाथ! तुम्हारे किये पाप का प्रायश्चित न होने से स्वप्न स्वरूप इस कठिन रोग से कभी छुट्टी न पा सकोगे। अत एव जिस ब्राह्मण कन्या को तुम स्वप्न में देखते हो, उसका अनुसन्धान करो। जितनी भूमि से वह वंचित हुई है, उससे शतगुण भूमि उसको दान कर उसको प्रसन्नता लाभ करो। तुम्हारे मंगलार्थ में कुछ काल उसको अपने गृह में रख कर प्रति दिन उसके चरण का अर्चन करूंगी;—उससे क्षमा प्रार्थना करूंगी।

गंगागोविन्द, देवी सिंह की भांति पाखंडी नहीं था उसने अपनी सहधर्मिणी के उपदेशानुसार कार्य करना स्थिर किया। स्वप्न में जिस ब्राह्मण कन्या को देखता था उसको वह पूर्व से ही चीन्हता था सुतरां उसकी खोज करने के निमित्त मनुष्य प्रेरण किया। किन्तु उसके प्रेरित मनुष्यों ने लौट आकर कहा, वह ब्राह्मण कन्या क्षिप्तावस्था में प्रकाश्य पथ से चली जाती थी। कई मास हुए राजा देवी सिंह ने उसको बांध कर रक्खा है। गंगा गोविन्द ने तब

इस ब्राह्मण कन्या को छोड़ देने के निमित्त देवी सिंह को अनुरोध किया। परन्तु इस समय गंगागोविन्द मुर्शिदाबाद में कानूनगो थे। उस समय उनका कोई विशेष प्रभुत्व नहीं था। देवी सिंह ने तब उनकी बातों पर कान नहीं दिया, इससे देवी सिंह से गंगागोविन्द को प्रथम शत्रुता हुई। देवी सिंह पहिले भी सोचते थे और अब भी सोचते हैं, कि गंगागोविन्द सिंह इस ब्राह्मण कन्या को उपपत्नी करने के निमित्त उसका अनुसन्धान करते हैं। किन्तु प्रकृत अवस्था वह नहीं है। देवी सिंह की भांति जिसकी अंतरात्मा नरक सदृश हो गई है, उस मनुष्य को किसी कार्य में सदुद्देश्य नहीं देख पड़ता है।

गंगा गोविन्द सैंकड़ा चेष्टा करने पर भी उस ब्राह्मण कन्या को न पा सके। परन्तु बारह वर्षों से प्रायः प्रत्येक रात्रि को अद्भुत स्वप्न देखते हैं।

——

सप्तदश अध्याय ।

यही तो विप्लव का फल।

रे पापिष्ट राजा रायदुर्ल्लभ दुर्बल,
बाङ्गालि कुलेर ग्लानि, विश्वासघातक,
डुबिलि डुबालि पापि! कि करिलि बल,
तोर पापे बाङ्गालिर घटिबे नरक॥

नवीनचंद्रसेन।

इसके पूर्व्ववर्त्ती अध्याय में लिखित गङ्गागोबिन्द का स्वप्न वृत्तान्त पाठकर, पाठकगण, बोध होता है, सहज ही अनुमान कर सकेंगे, कि गंङ्गागोबिन्द कुटी निवासिनी कन्या का ही स्वप्न देखता था। परन्तु यह कुटी निवासिनी रमणी कौन है? एवं किस प्रकार से इसकी बर्तमान दुरवस्था हुई है? इसके प्रगट करने के पूर्व्व कई एक ऐतिहासिक घटना प्रकाशित करना आवश्यक है। अतएव इस अध्याय के प्रारम्भ में हम वही सम्पूर्ण ऐतिहासिक वृत्तान्त प्रकाश करते हैं।

बङ्गदेश मुसलमानों से पराजित होनें पर,

महाराज मानसिंह एवं टोड़रमल्ल प्रभृति सहृदय सूबेदार गण ने, अपने अपने शासन काल में, बङ्ग के भिन्न भिन्न प्रदेश की अनेकानेक भूमि ब्राह्मण पण्डितों को बिना करके धर्मार्थ दान की थी वह ब्राह्मण पण्डितों के भिन्न देश के अन्यान्य अच्छे २ गुणवान् और सच्चरित्र मनुष्यों को कभी कोई सन्मान सूचक उपाधिकाल में बहुतसी भूमि दान कर देते थे। वर्त्तमान काल में जैसे कोई रेलवे कन्ट्रैक्टर या पब्लिकवर्क डिपार्टमेन्ट के ओवरसियर, गवर्नमेन्ट का दो तीन लक्ष रुपया चोरी करके, उस में से दस हज़ार रुपया किसी एक कमिश्नर के अनुरोध से साधारण के हितकर कार्य्य में दान करने से, राय बहादुर किम्बा सी० एस० आई० की उपाधि प्राप्त करते हैं, पूर्व्व में ऐसा नियम नहीं था, हिन्दू किम्बा मुसल्मान राजगण किसी व्यक्ति को सन्मान सूचक उपाधि देने के अवसर में प्रायः भूमिदान करते थे। कभी कभी अन्य कोई मूल्यवान वस्तु बिना मूल्य ही प्रदान करते थे। नज़र स्वरूप उस जिन्स का कोई मूल्य ग्रहण नहीं करते थे। इस प्रकार भूमिदान का प्रचार होने से,

बङ्गदेश की प्रायः एक चतुर्थांश भूमि देशीय ब्राह्मण पण्डित गण एवं सच्चरित्र मनुष्य बिना कर के भोग करते थे। बंङ्ग के मुसलमान सूबेदारों में जो दो एक अत्यन्त नीच स्वभाव के मनुष्य परिचित थे, वह भी उस सम्पूर्ण निष्कर ब्राह्मण भूमि को ज़ब्त करने के निमित्त, किम्वा आईन का छल (legal fiction) कर उस पर कोई नूतन कर स्थापन की चेष्टा नहीं करते थे। परन्तु सिराज के सिंहासन च्युत होने पर लार्ड क्लाइव प्रभृति के अत्यन्त लोभी होने से मुर्शिदाबाद का राज कोष एक बार ही शून्य हो गया। तब देश की राजस्व की बृद्धि न करने से व्यय निर्वाह नहीं होता। सुतरां मीर जाफ़र के सिंहासन प्राप्ति के पश्चात् ही देशीय ज़मींदारों पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ। इसके अतिरिक्त मीर कासिम ने सिंहासन लाभ करने के निमित्त ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्म्मचारियों को बहुत सा घूस देने की प्रतिज्ञा की थी और इसी घूस का रुपया देने के लिये उन को बङ्ग के राजस्व को प्रायः दूना बढ़ाना पड़ा। १५८२ साल में महाराज टोड़रमल्ल के अमल में बङ्ग की भूमि का वार्षिक राजस्व एक

करोड़ सात लाख रुपया था इस के पश्चात् १७५६ साल में सिराज के राजत्व पर्य्यन्त भूमि का राजस्व एक करोड़ पैंतालीस लाख रुपयों से अधिक कभी नहीं होता। किन्तु मीर कासिम के समय (१७६२ साल में) दो कोटि छप्पन लक्ष रुपयों से अधिक रक्खा गया पीछे क्रमशः भूमि की राजस्व वृद्धि होने लगी।

मुहम्मद रज़ा ख़ां के समय से बङ्ग की ब्राह्मणों की माफ़ी ज़मीन का ज़ब्त होना आरम्भ हुआ। किन्तु मुहम्मद रज़ा ख़ां के पदच्युत होने के पश्चात् जब वारेन हेस्टिङ्गस ने स्वयं राजस्व अदा का भार ग्रहण किया, तब बङ्गदेश में निष्कर ज़मीन भोग करने का किसी का अधिकार भी वह कार्य्य द्वारा कभी स्वीकार नहीं करते। वह ज़मींदार, तालुकेदारों को मूल से उखाड़ कर उन की पैतृक ज़मींन नीच वंशोद्भव कलकत्ता के बनियों को इजारा देने लगे। इजारादार गण यथा साध्य जमा वृद्धि करने लगे। इस प्रकार सिराज के सिंहासन च्युत होने पर राज विप्लव के प्रसंग में देश के भूमिविभाग एवं भूमि-विधान सम्बन्ध में घोर परिवर्त्तन उपस्थित हुआ।

वर्त्तमान समय के टी एक खास महाल के डिप्टी कलेक्टर के भांति मुहम्मद रज़ा खां वारेन हेस्टिङ्गस को प्रसन्नता लाभ करने के अभिप्राय से, अनेक अनुचित उपाय अवलम्बन करके बङ्ग के राजस्व वृद्धि को चेष्टा करने लगे। रज़ा खां के अधीन में गङ्गा गोविन्द सिंह का ज्येष्ट भ्राता राधा गोविंद सिंह मुर्शिदाबाद के अन्तर्गत किसी एक परगना में कानूनगो का कार्य्य करता था। किन्तु इसी समय जिस कानूनगो ने अपने २ रजिस्टर परिवर्त्तन पूर्ब्बक परगना की ब्रह्मत्र ज़मीनों को जब्त करने का सुबीता कर दिया, वही मुहम्मद रज़ा खां और ईस्ट इण्डिया कम्पनी को प्रसन्नता लाभ करने में समर्थ होता। राधा गोविन्द सिंह एक धार्मिक पुरुष थे मिथ्या प्रवञ्चना पर वह सब प्रकार से घृणा करते थे। सुतरां रज़ा खां और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधीन उन के समान सत्पुरुषों का नौकरी करना अत्यन्त कठिन हो गया। किन्तु उन का कनिष्ट भ्राता गङ्गा गोविन्द सिंह बाल्य अवस्था मे ही बड़ा चतुर और कार्य्यदक्ष था उस ने ज्येष्ट भ्राता के स्थान में नियुक्त होकर कानूनगो का कार्य्य करना आरम्भ किया;

और दो ही एक मास में अनेकानेक ब्राह्मणों की ब्रह्मत्र ज़मीन के ज़ब्त करने का सुबीता कर दिया।

इसी समय मुर्शिदाबाद की राजधानी के निकटवर्त्ती किसी एक प्रसिद्ध ग्राम में जगन्नाथ भट्टाचार्य्य नामक एक ब्राह्मण वास करता था। उसकी सहधर्म्मिणी का नाम कमला देवी था। कमला देवी देखने में जैसी रूपवती थी, वैसाही उसका चरित्र भी था। शान्त सुशीला कमला देवी को विष्णु की कमला की भांति परम साध्वी और सदा चारिणी समझ कर ग्राम के सबही भक्ति श्रद्धा करते थे। जो उसे एक बार देखता वह उसकी उस स्नेहमयी प्रशान्त मूर्त्ति को कभी नहीं भूल सकता। कमला देवी के गर्भ से जगन्नाथ के तीन पुत्र जन्मे थे। उन तीनों बालकों का अंग सौष्टव देख कर दर्शकमात्र ही मुग्ध हो जाते थे।

शास्त्रज्ञ और धर्म्मनिष्ठ जगन्नाथ भट्टाचार्य्य स्त्री पुत्र सहित परम सुख से काल व्यतीत करते थे। उनको सांसारिक कोई कष्ट नहीं था। पैतृक ब्रह्मत्र भूमि की आमदनी द्वारा वह स्वच्छन्द सुख से जीविका निर्वाह करते थे। कभी किसी शूद्रादि का दान ग्रहण नहीं करते थे।

किन्तु प्रारब्ध के बुरे फल से, गंगागोबिन्द के चक्रान्त से, मुहम्मद रज़ा खां के अमल में जगन्नाथ की सम्पूर्ण ब्रह्मत्र भूमि जब्त हुई। महाराज मान सिंह ने जगन्नाथ के पूर्व्व पुरुषों को यह भूमि मुंह मांगे दान किया था। इसका कोई आज्ञा पत्र नहीं था। अन्यून तीन सौ वर्षों पर्य्यन्त पुरुष परम्परा से जगन्नाथ और उनके पूर्व्व पुरुष गण इस भूमि को भोग करते थे। कानूनगो के रजिस्टर ही में इस ब्रह्मत्र का एक मात्र प्रमाण था। किन्तु गंगागोबिन्द के रजिस्टरों में इस ब्रह्मत्र भूमि का कोई उल्लेख नहीं था इस लिये मुहम्मद रज़ा खां के समय जगन्नाथ की ब्रह्मत्र भूमि जब्त हुई।

जगन्नाथ सोचने लगा, कि गंगागोबिन्द सिंह की दुष्टता ही उनके इस विपद का मूल कारण है। सर्वदा ही गंगागोबिन्द को शाप देते थे। उनके स्त्री पुत्र के प्रति पालन का और कोई उपाय नहीं था उनकी ब्रह्मत्र भूमि खालसा होने पर भी उनके प्राचीन प्रजा गण दो तीन मास पर्य्यन्त उन्हीको जमा देते गये। किन्तु थोड़े ही काल में इस भूमि का कासिम बाज़ार के बेबर (Baber) साहेब के नौकरों ने